

मोदी जीते तो शाह को पीएम बनाएंगे योगी को मुख्यमंत्री पद से हटाएंगे

केजरीवाल बोले-प्रधानमंत्री अगले साल 75 के होंगे, क्या रिटायरमेंट लेंगे



ऑफिस में पहला चुनावी भाषण दिया। उन्होंने 21 मिनट की स्पीच की शुरुआत हनुमान जी से की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, तानाशाही, भ्रष्टाचार, देश, विपक्षी गठबंधन से होते हुए प्रभु यानी भगवान पर खत्म की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अगले चुनाव जीतती है तो मोदी अमित शाह को प्रधानमंत्री बनाएंगे। सरकार बनने के दो महीने के अंदर उत्तर प्रदेश के सीएम योगी जी को पद से हटाया जाएगा। आम आदमी पार्टी को 10 साल हुए। दो राज्यों में सरकार है।

‘राम भक्त और मोदी के शेर हर मोड़ पर घूम रहे’



नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव में विवादित बयानों का दौर शुरू हो चुका है। भाजपा नेता और अमरावती से प्रत्याशी नवनीत राणा की तरफ से एक बार फिर धमकी भरे अंदाज में ओवैसी को चेतावनी दी गई है। कुछ दिन पहले ही नवनीत राणा ने कहा था कि अगर 15 सेकंड दिए गए तो पता भी नहीं चलेगा कि छोट्टा और बड़ा भाई कहाँ गए। अब उसी कड़ी में नवनीत की तरफ से एक बार फिर तलख अंदाज में बड़ा बयान दिया गया है। नवनीत राणा ने कहा कि हम लोग तो अपने घर के बाहर सजावट के रूप में तोप रखते हैं। ओवैसी कहते हैं कि मैंने अपने भाई को कंट्रोल में रखा है, ये अच्छी बात है वरना राम भक्त और मोदी जी के शेर तो अब हर नुकड़ पर हर मोड़ पर खड़े हुए हैं। मैं खुद जल्द फिर हैदराबाद आने वाली हूँ। अब जानकारी के लिए बता दें कि नवनीत राणा की तरफ से ये बयान इसलिए आया क्योंकि ओवैसी ने खुद छोटे भाई का जिक्र किया था।

चीन ने भारत के एक और पड़ोसी को लगाया अरबों का चूना

मिसाइल लेकर जेट तक सब निकले ‘कबाड़’, भारी पड़ी दोस्ती



बांग्ला (एजेंसी)। म्यांमार को पाकिस्तान में बने घंटिया जेएफ- 17 फाइटर जेट सप्लाई करने के बाद अब चीन के हथियारों की भारत के एक और पड़ोसी देश में पोल खुल गई है। चीन ने हाल के वर्षों में 2.59 अरब डॉलर के हथियार बांग्लादेश की सेना को बेचा है। इससे चीन बांग्लादेश का मुख्य हथियार सप्लायर बनकर उभरा है। चीन की मंशा है कि वह भारत के एक और पड़ोसी देश को अपने पाले में लाकर प्रभाव को बढ़ाया जा सके। वहीं बांग्लादेश भी गुप्तचुप भारत के दुश्मन से दोस्ती बढ़ा रहा है। अब खुलासा हुआ है कि बांग्लादेश ने चीन से एफ-7 फाइटर जेट खरीदा है जो अब तकनीकी गड़बड़ियों का शिकार हो गया है।

सीएम ने रतलाम के रोड शो में गदा घुमाई चौथे चरण की 8 सीटों पर प्रचार का था आखिरी दिन



रतलाम (नप्र)। लोकसभा इलेक्शन के चौथे चरण में मध्यप्रदेश की 8 लोकसभा सीटों पर शाम 6 बजे चुनाव प्रचार बंद हो गया। चरण में शामिल 8 लोकसभा सीट देवास (अजा), उज्जैन (अजा), मंदसौर, रतलाम (अजजा), धार (अजजा), इंदौर, खरगोन (अजजा) एवं खंडवा में 13 मई को मतदान होगा। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने बताया कि संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में मतदान खत्म होने के 48 घंटे पहले से चुनाव प्रचार बंद करने का प्रावधान है। प्रचार-प्रसार समाप्त होने की समय-सीमा के बाद बाहरी क्षेत्र के उन व्यक्तियों को, जो उस लोकसभा क्षेत्र के मतदाता नहीं हैं, उन्हें वह निर्वाचन क्षेत्र छोड़ना होगा।

पटवारी बोले- भाजपा प्रत्याशी जज है, आपका सेवक नहीं बन सकता

चुनाव प्रचार के अंतिम दिन शनिवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने देवास संसदीय क्षेत्र में पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा के साथ जनसभाओं को संबोधित किया। कहा- अगर कोई बात करूंगा तो जीतू पटवारी पर मुकदमा करा दिया जाएगा। वो जज है (देवास लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी)। उसकी जज की पोशाक, जज के विचार हैं, वो दिमाग में से ये सब निकालता ही नहीं। जनप्रतिनिधि जनता का नौकर होता है और जज जनता का मालिक। वो मालिक से जनता का सेवक बनना ही नहीं चाहता।

सूरज से उठे महाशक्तिशाली तूफान के बाद रात में दिखा भव्य नजारा



कुदरत का हैरान करने वाला अजूबा,रोशनी से नहाया आसमान,नजर आई जन्नत

वाशिंगटन (एजेंसी)। दुनिया का सबसे शक्तिशाली सौर तूफान 20 सालों बाद शुक्रवार 10 मई को धरती से टकराया। तूफान के कारण तस्मानिया से लेकर ब्रिटेन तक आसमान में तेज बिजली कड़की। वहीं कई सैटेलाइट्स और पावर ग्रिड्स को भी नुकसान पहुंचा। सोलर तूफान के कारण दुनिया की कई जगहों पर ध्रुवीय ज्योति (ऑरोंरा) की घटनाएं देखने को भी मिलीं। इस दौरान सौर तूफान की वजह से आसमान अलग-अलग रंगों को दिखाई दिया। अमेरिकी वैज्ञानिक संस्था नेशनल ओशनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन के मुताबिक इस सौर तूफान का असर सप्ताह के अंत तक रहेगा।



इसे मुख्य तौर पर दुनिया के उत्तरी और दक्षिणी हिस्सों में देखा जा सकेगा। लेकिन अगर यह तेज होता है तो इसे और भी कई जगहों पर देखा जा सकता है। दुनिया भर में सैटेलाइट ऑपरेटर्स, एयरलाइंस और पावर ग्रिड को ऑपरेटर अलर्ट पर हैं। सौर तूफान आने का कारण सूर्य से निकलने वाला कोरोनल मास इजेक्शन है। दरअसल कोरोनल मास इजेक्शन के दौरान सूर्य से आने वाले पार्टिकल्स धरती की मैग्नेटिक फील्ड में एंट्री करते हैं। पार्टिकल्स के धरती पर एंट्री करने के बाद एक रिपकशन होता है, जिसके कारण पार्टिकल्स चमकदार रंग- बिरंगी रोशनी के रूप में दिखते हैं।

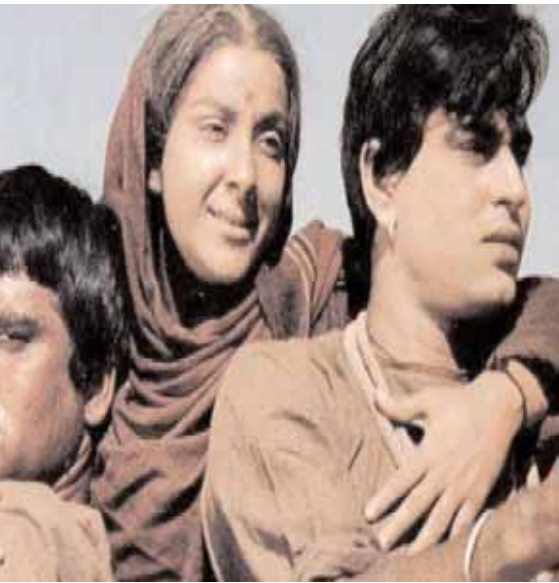
मदर्स डे पर हास्य-विनोद

रमेश रंजन त्रिपाठी

मदर्स डे पर कुछ नया करने की सोच के चलते वह रिपोर्टर फिल्मी माताओं का इंटरव्यू लेने बॉलीवुड पहुंच गया। वहीं भी मदर्स डे का उत्सव मनाया जा रहा था। उसे अनेक माताएँ नजर आईं जो अपनी विशेषताओं को सहजे गर्वित भाव के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रही थीं। उसने संयोजक के खास व्यक्ति से अनुरोध कर सभी माताओं से परिचय करने और उनसे एकाध सवाल पूछने का जुगाड़ कर लिया। वह सबसे पहले उनके सामने खड़ा था जिन्हें कुछ लोग बहुत लापरवाह माँ कहने लगे थे। वे अपने बच्चों को खो देने के लिए जानी जाती थीं, कभी ट्रेन में, कभी कुंभ के मेले में तो कभी यहाँ कभी वहाँ। उसने पूछ लिया- ‘आप जानबूझकर बच्चों को गुमा देती थीं या वे अपने आप खो जाते थे?’ वे हँस दी- ‘मैं बच्चों को हमेशा के लिए नहीं खोने देती थी। मैं जानती थी कि पंद्रह-बीस सालों बाद वे जरूर मिलेंगे, इसलिए पहचान पुख्ता करने के लिए उन्हें कोई न कोई निशानी दे देती थी, जैसे टैटू, शारीरिक मस्सा या तिल, लॉकेट, फोटो, चिड़ड़ी या ऐसा ही कुछ। बच्चों को इतनी ट्रेनिंग दे देती थी कि वे इस पहचान को सालों साल सम्हाल कर रखे रहें। एक बार जो निशानी अपने किसी बच्चे को दे देती थी, कोशिश करती थी कि दूसरे बच्चे के साथ उसका दोहाव्य न हो। अपने दिल को

फिल्म और माताएँ

इस प्रकार प्रशिक्षित कर लेती थी कि यदि कोई नकली बेटा या बेटी बनकर आ जाता था तो मेरा मन उसकी बदमाशी को पकड़ लेता था। बॉलीवुड में हृदय की ऐसी ट्रेनिंग या परिवर्तन के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था है। इस विधा के एक से बढ़कर एक एक्सपर्ट कहानीकार यहाँ मौजूद हैं। वह चकित होकर दूसरी माँ की ओर बढ़ गया। ये माता जी बीमार होने की विशेषज्ञ थीं। पुराने जमाने में क्षय रोग से ग्रस्त रहती थीं, तो आधुनिक समय में कैंसर इनका फेवरिट था। बच्चे इनके इलाज की खातिर पैसा कमाने के चक्कर में खुंखार अपराध से लेकर बड़े विचित्र जुगाड़ जमाने में लगे रहते थे। एक बार पैसा कमाने के लिए इनका युवा हैंड्सम गबरू बेटा बूढ़ा प्रोफेसर बन गया और चाची, भतीजी के चक्कर में उलझकर बड़ी मुश्किल में फँस गया था। बीमार माँ के छोटे बच्चे दवा के इंतजाम के लिए चोरी तक करने लगते थे। बिस्तर पकड़ने, खाँसने या कराहने में बीमार माता जी का जवाब नहीं होता। उसने बीमारी से डरकर उन्हें दूर से नमस्कार किया और आगे बढ़ गया। आगे मेहनत-मजदूरी कर बड़ी मुश्किल से बच्चों को



पालनेवाली माँ मिल गईं। वे संतान के चक्कर में बर्तन मॉर्ने, झाड़ू-पोछा लगाने, कपड़े सिलने जैसे अनेक श्रमसाध्य कामों को बहुत आसानी से करने के लिए विख्यात थीं। सिलाई कर बेटी को पढ़ा लिखाकर अपने

पैरों पर खड़ा करने के कारण नाम कमा चुकीं माँ के गाने आज भी लोग बड़े चाव से सुनते हैं। उसने साहस जुटाया और पूछ लिया- ‘बार-बार काम की अदला-बदली से आपको परेशानी नहीं होती?’ ‘शुरू शुरू में थोड़ा दिक्कत पेश आई थी लेकिन फिर आदत पड़ गई।’ माता जी बताते लगी- ‘जब किसी काम को करने के अच्छे खासे पैसे मिलने लगते हैं तो सब ठीक हो जाता है। काम भी बनने लगता है और मन भी लगने लगता है।’ उसकी अगली मेहमान वे थीं, जो माँ का रोल करते हुए बेटे को असल जिंदगी में पति बना लेने या पत्नी बनते-बनते अचानक माँ की भूमिका में आ जाने का घालमेल करने से नहीं हिचकतीं थीं। ‘अपको किसी कलाकार की कभी पत्नी या कभी माँ बनने में असहजता महसूस नहीं हुई?’ उसने पूछने की हिम्मत दिखाई। वे बोली- ‘इसमें अजीब क्या है? मेरे लुक, उम्र और शारीरिक बनावट ने उम्र बढ़ा दी। रही सही कसर मेकअप ने पूरी कर दी। तो, मेरे पास चारा क्या बचा था? मार्केट में जमे रहने के लिए सब करना पड़ता है।’ तभी उसकी दृष्टि चमचों से घिरी माता जी पर पड़ी। वे

चमत्कारों के लिए मशहूर थीं। कभी उनकी आँखों की रोशनी लौट आती थी तो कभी खोयी हुई आवाज। कभी लंगड़ाते-लंगड़ाते वे दौड़ने लगतीं थीं तो कभी किसी ठोकर से उनकी याददाश्त वापस आ जाती थी। ऐसा लगता था कि चमत्कार और खोया-पाया विभाग एकसाथ मिलकर काम करते हैं। बहु की सास और पति की माँ भी उसक के साथ बैठीं थी। दरअसल वे एक ही सिक्के की दो पहलू थीं। उन्हें डॉट लगाने, बर्तन फेंकने, तोड़फोड़ करने, काम में मौनमेख निकालने, बड़बड़ाने, घर से धक्का देकर बाहर निकालने, लानत भेजने, ताना मारने, खरी-खोटी सुनाने, बेइज्जत करने जैसे सासू माँ टाइप के कामों में महारत हासिल थी। उनसे सवाल करने की उस बेचारे की हिम्मत ही नहीं हुई। वहीं तेज तर्रार माता जी मिल गईं, जिन्होंने अपने बिगड़ैल बेटे को गोली मार दी थी। बेटे का दोष इतना था कि उसने अपनी माँ के कंगन पहने देख सुदखोर की बेटी का अपहरण कर लिया था। इतनी गुस्सेल माँ से बातचीत की हिम्मत नहीं नहीं जुटा पाया। उनके डर से वह समीप बैठी सौम्य, सुशील, धार्मिक और दयालु स्वभाव की आदर्श माता जी से भी बातचीत नहीं कर पाया।

उसे याद आया कि सभी माताओं का गला बहुत सुरीला है। उन्हें स्वर कोकिला बनने की कला भी आती है। उलझे बाल, फटे कपड़े, रिलसरीन से तर आँखें, सूखे होंठ, मुखाया चेहरा उन पर बहुत फबता है। सुरीले गीत के साथ इनका मेल-मिलाप यकीनन दर्शकों के आँसू और बॉक्स ऑफिस पर धमाल की गारंटी होता है। वह उनसे कोई गाना सुनाने का अनुरोध करता कि उसके मोबाइल की घंटी बज उठी। संपादक जी उसकी रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर रहे थे। रिपोर्टर की नौद खुल गई

हरियाणा के मोर्चे पर ऐक्टिव हुए बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा

पंचकूला में पार्टी नेताओं के साथ की संगठन की एक अहम बैठक

- हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी ने 15 मई को बुलाई कैबिनेट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। हरियाणा में मचे सियासी घमासान और लोकसभा चुनाव प्रचार के बीच बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पंचकूला पहुंचकर प्रदेश कार्यकारिणी के साथ बैठक की। शुक्रवार को कई घंटे तक चली इस बैठक में लोकसभा की सभी 10 सीटों पर चर्चा की गई। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के हरियाणा दौरे को लेकर भी रणनीति पर चर्चा की गई। इस बैठक में मुख्यमंत्री नायब सैनी और पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल के साथ हरियाणा में चल रहे राजनीतिक संकट को लेकर भी चर्चा की गई। हरियाणा में पिछले चार दिनों से राजनीतिक घमासान मचा हुआ है। समूचा विपक्ष एकजुटता से नायब सरकार को अल्पमत की सरकार बताकर घेर रहा है। दूसरा, चुनाव प्रचार के दौरान बीजेपी प्रत्याशियों का कई जगह विरोध हो रहा है। ऐसे में शुक्रवार को चंडीगढ़ दौरे पर आए जेपी नड्डा की अध्यक्षता में हुई बैठक में मुख्यमंत्री नायब सैनी, पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल, सभी लोकसभा क्षेत्र के संयोजक मौजूद रहे। बीजेपी की अहम बैठक में जहां नड्डा ने फीडबैक

लिया तो वहीं सीएम नायब सैनी ने 15 मई कैबिनेट की मीटिंग बुलाई है। बैठक में नड्डा ने प्रत्येक सीट पर अब तक हुए प्रचार को लेकर रिपोर्ट ली। इस बैठक के दौरान नड्डा ने कैप्टन अभिमन्यु के साथ हिसार लोकसभा सीट पर करीब आधा घंटा चर्चा की।

बृजभूषण बोले-आरोप साबित हुए तो फांसी पर लटक जाऊंगा



आरोप साबित हुए, तो मैं खुद फांसी पर लटक जाऊंगा। अब कोर्ट को सबूत देने का वक़्त आ गया है। अभी चुनाव चल रहा है। मेरे साहबजादे (बेटा) चुनाव लड़ रहे हैं। चुनाव जीतने दौड़िए। फिर आगे की रणनीति पर बात करूंगा। शुक्रवार को दिल्ली की राजउ एवेन्यू कोर्ट ने 5 महिला पलवानों से यौन शोषण के आरोप में बृजभूषण पर आरोप तय किए। कोर्ट ने कहा कि पुलिस की चार्जशीट में आरोप तय करने के लिए पर्याप्त सबूत हैं।

बुलाएं तो भी नहीं जाऊंगी उनके बगल में बैठना पाप

राज्यपाल आनंद बोस पर बरसी ममता

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शनिवार को राज्यपाल सी वी आनंद बोस पर लगे छेड़खानी के आरोपों को लेकर उनकी आलोचना की। उन्होंने कहा कि उनको यह स्पष्ट करना चाहिए कि उन्हें पद से इस्तीफा क्यों नहीं दे देना चाहिए। हुगली लोकसभा सीट से तुणमूल कांग्रेस की उम्मीदवार रचना बनर्जी के समर्थन में यहां एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जब तक बोस राज्यपाल बने रहेंगे तब तक वह राजभवन के अंदर कदम नहीं रखेंगी।



भोपाल में कार में सुसाइड, पत्नी को वीडियो मैसेज भेजा

कहा- पार्टनरशिप के बाद पेमेंट नहीं दिया, आरोपियों को सजा दिलाएं



भोपाल (नप्र)। भोपाल के लिंक रोड नंबर 1 स्थित आनंद विहार स्कूल के पास एक व्यक्ति ने कार में सुसाइड कर लिया। पुलिस को सुसाइड नोट भी मिला है, जिसमें कर्ज से परेशान होने का जिक्र है।

2022 में 15 लाख रुपए देकर चुप कराया

वीडियो में राधेश्याम सेन ने कहा है कि कंपनी में पार्टनरशिप के बाद 2021 तक पेमेंट नहीं किया गया। 2022 में कंपनी के संचालकों ने 15 लाख रुपए देकर चुप करा दिया कि आगे कार्रवाई नहीं करोगे। इसकी शिकायत रातीबड़ थाने में करना पड़ी। वीडियो के आखिर में राधेश्याम सेन ने गुहार लगाई है कि उनके बच्चों को कर्ज मुक्त कराया जाए। ऐसे उद्योगपतियों को सजा दी जाए।

व्यक्ति ने शुक्रवार सुबह 11 बजे पत्नी को वीडियो मैसेज भेजा था। इसमें एक कंपनी में 2003 में पार्टनरशिप दिए जाने और पेमेंट नहीं दिए जाने की बात कही गई है। बच्चों को कर्ज मुक्त कराए जाने की गुहार लगाई है। आरोपियों को सजा दिलाने को भी कहा है। टीटी नगर पुलिस के मुताबिक नीलबड़ निवासी राधेश्याम सेन (52) ने आनंद विहार

स्कूल के नजदीक कार में जहर खा लिया। उन्होंने सुसाइड से पहले पत्नी नीता सेन को वीडियो मैसेज भेजा था। इसमें खुद को सॉरबिन कंपनी में 2003 के बाद पार्टनरशिप दिए जाने और इसके बाद पेमेंट नहीं किए जाने की बात कही है। कंपनी का संचालक जगदीश अरोरा, अनिल अरोरा और अजय अरोरा को बताया है।

शुक्रवार को दर्ज हुई थी गुमशुदगी

पुलिस ने बताया कि राधेश्याम सेन के बेटे ने पिता की गुमशुदगी 10 मई की सुबह करीब 11 बजे दर्ज कराई थी। नीता सेन ने मैसेज की जानकारी बच्चों को दी थी। पिता नहीं मिले, तो गुमशुदगी दर्ज करवाई।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में मना योग महोत्सव

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय ने भारत सरकार के आयुष मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के साथ मिलकर योग महोत्सव का आयोजन विश्वविद्यालय के योग विभाग के द्वारा किया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. डॉ. ईश्वर भारद्वाज, डॉ. उधम सिंह, डॉ. साधना दौनेरिया और डॉ. दिलीप तिवारी रहे। इस महोत्सव की थीम महिला सशक्तिकरण के लिए योग थी।

इस मौके पर डॉ. ईश्वर भारद्वाज ने कहा कि योग एक ऐसी अनमोल धरोहर है जिसे हमें संसार के साथी के रूप में



स्वीकार करना चाहिए। यह हमारी आत्मा को परमात्मा की ओर ले जाती है। उन्होंने महिलाओं के लिए योग की अहमियत पर भी बात की। डॉ. उधम सिंह ने योग के लाभों पर ध्यान दिलाते हुए कहा योग न केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारता है, बल्कि हमारे मानसिक और आत्मिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अलावा डॉ. साधना दौनेरिया और डॉ. दिलीप तिवारी ने भी योग के महत्व पर अपने विचार साझा किए। साथ ही योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रवेश पांडे ने भी योग के विभिन्न उपयोगी विषयों पर विस्तृत चर्चा की।

इस अवसर पर योग एक्सपर्ट द्वारा सूर्य नमस्कार, नौकासन त्रिकोणासन, भुजंगासन, ताड़ासन, वीरभद्रासन, सवासना, प्राणायाम अनुलोम-विलोम आदि सहित कई अन्य योग मुद्राओं का अभ्यास करवाया। इस महोत्सव में शामिल हुए सभी लोगों ने योग के जीवन में महत्व और इसके लाभ को जाना। कार्यक्रम में मंच का सफल संचालन योग विभाग के शिक्षक श्री अखिलेश जी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में उपकुलपति डॉ संगीता जौहरी, रक्षा एडमिन डॉ. सी पी मिश्रा, डीन एकेडमिक डॉ. मनीष गुप्ता सहित अध्यापकगण और बड़ी संख्या में छात्राएं सम्मिलित हुए।

म.प्र. में 4 दिन बदला रहेगा मौसम

कई जिलों में ऑरेंज अलर्ट: मौसम विभाग ने कहा- बिजली चमके तो सुरक्षित स्थान पर चले जाएं

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में पिछले 4 दिन से आंधी-बारिश और ओले गिर रहे हैं। शुक्रवार को मंदसौर में पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान की सभा के पंडाल का टेंट उड़ गया। वहीं, उज्जैन, शाजापुर, रायसेन, सीहोर जिलों में तेज बारिश हुई। भोपाल, इंदौर, रतलाम में बादल छाए रहे। ऐसा ही मौसम शनिवार को भी बना था। इसके चलते छिंदवाड़ा, बैतुल, नर्मदापुरम समेत 10 जिलों में ऑरेंज अलर्ट है। सीहोर जिले में आंधी से पेड़ उखड़ गए तो बिजली केबल भी टूट गई। रायसेन-शाजापुर में भी तेज बारिश हुई। भोपाल के कुछ इलाकों में हल्की बौछरें गिरीं।

बारिश के साथ तेज गर्मी का असर भी- बारिश के साथ तेज गर्मी का असर भी है। गुना में दिन का टेम्पेचर 44.4 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। इससे गुना में सीजन का सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया। शिवपुरी में पारा 43 डिग्री रहा। वहीं, रतलाम में 42 डिग्री, टीकमगढ़ में 42.5 डिग्री और सागर में 42.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया।

बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 41.5 डिग्री, इंदौर में 40.6 डिग्री, ग्वालियर में 40.5 डिग्री, जबलपुर में 39.4 डिग्री और उज्जैन में तापमान 41.5 डिग्री दर्ज किया गया।



रायसेन, सीधी, धार, खजुराहो, खंडवा, नौगांव, दमोह, खरगोन और शाजापुर में पारा 40 से 41.6 डिग्री के बीच रहा।

इसलिए बदला मौसम- भोपाल की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, तीन वेस्टर्न

डिस्टर्बेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने, साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम और हवा का रुख बदला होने की वजह से ऐसा मौसम है। प्रदेश के कुछ जिलों में बारिश का दौर चल रहा है। 14 मई तक मौसम बदला रहेगा। प्रदेश में आकाशीय बिजली गिरने का भी

भोपाल में निर्दलीय प्रत्याशी ने 1 रुपए भी नहीं खर्चा

13 कैडिडेट का चुनावी एक्सपेंड 1 प्रतिशत भी नहीं, अरुण का खर्च आलोक से आधा



भोपाल (नप्र)। भोपाल लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी आलोक शर्मा ने चुनाव में सबसे ज्यादा 53 लाख रुपए खर्च किए। इसमें पीएम नरेंद्र मोदी के रोड शो का खर्च भी शामिल है। दूसरे नंबर पर कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव हैं। उन्होंने कुल 22.73 लाख रुपए खर्च किए हैं। हालांकि, 13 कैडिडेट्स ऐसे भी रहे, जिनका कुल चुनावी खर्च 1 प्रतिशत भी नहीं है। वे पूरे चुनाव 95 लाख रुपए तक खर्च कर सकते थे। एक निर्दलीय कैडिडेट राजेश कीर ने एक रुपया भी नहीं खर्च किया है। भोपाल लोकसभा सीट से 22 उम्मीदवारों में रहे। 7 मई को वोटिंग हुई और 4 जून को नतीजे आएंगे। वोटिंग से पहले उम्मीदवारों ने चुनावी खर्च की जानकारी भी जिला प्रशासन को दी। सबसे ज्यादा खर्च करने में बीजेपी के शर्मा आगे रहे।

आलोक इसलिए सबसे आगे- खर्च के मामले में आलोक शर्मा अन्य कैडिडेट्स से शुरुआत से ही नंबर-1 पर हैं। पीएम मोदी ने 25 अप्रैल को भोपाल में रोड शो किया था। वहीं, खर्च के मामले में कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव दूसरे नंबर पर रहे। उन्होंने 22 लाख रुपए से ज्यादा खर्च किए हैं। हालांकि, सोशल मीडिया पर वे ज्यादा एक्टिव रहे। इसलिए वीडियो बूस्ट कराने में वे नंबर-1 पर रहे।

सीएम डॉ. मोहन यादव के रोड शो और सभाएं भी हुई हैं। इनका खर्च भी जोड़ा गया है। दूसरी ओर, कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव के पक्ष में भोपाल में एक भी बड़े नेता की सभा नहीं हुई। इस वजह से आलोक के मुकाबले उनका खर्च आधा भी नहीं रहा।

खर्च के मामले में पूर्व स्पेशल डीजी गुप्त तीसरे नंबर पर- खर्च के मामले में पूर्व स्पेशल डीजी मैथिलीशरण गुप्त तीसरे नंबर पर हैं। वे निर्दलीय उम्मीदवार हैं और अब तक 3 लाख 6 हजार रुपए से ज्यादा खर्च कर चुके हैं। गुप्त सभी 22 उम्मीदवारों में से सबसे अमीर हैं। उनके पास 18 करोड़ रुपए से ज्यादा की संपत्ति है। अरुण 14 करोड़ और आलोक साढ़े 8 करोड़ रुपए की संपत्ति के मालिक हैं।

खर्च के मामले में कांग्रेस के अरुण श्रीवास्तव दूसरे नंबर पर रहे। उन्होंने 22 लाख रुपए से ज्यादा खर्च किए हैं। हालांकि, सोशल मीडिया पर वे ज्यादा एक्टिव रहे। इसलिए वीडियो बूस्ट कराने में वे नंबर-1 पर रहे।

निर्दलीय राय ने 2.24 लाख रुपए खर्च किए- एक अन्य निर्दलीय अंकित राय ने भी 2.24 लाख रुपए खर्च किए हैं। छत्रपति शिवाजी भारतीय गरीब पार्टी से कैडिडेट अजय पाठक ने 1.32 लाख रुपए, निर्दलीय भारती यादव ने 1.28 लाख रुपए, बसपा के भानुप्रताप सिंह ने 1.24 लाख रुपए और सोशलिस्ट यूनिटी सेंटर ऑफ इंडिया (कम्युनिस्ट) के मुदित चौरसिया ने 1.07 लाख रुपए पूरे चुनाव में खर्च किए।

शपथ में सबसे कम राशि बताई, खर्च ज्यादा- शपथ पत्र में कैडिडेट रामप्रसाद पटेल के पास बैंक में सिर्फ 194 रुपए और मुद्रित भटनागर के पास 500 रुपए ही कैश थे। हालांकि, दोनों ने ज्यादा राशि खर्च की। पटेल ने कुल 20 हजार 750 रुपए और मुद्रित ने 53 हजार 20 रुपए खर्च किए हैं। निर्दलीय उम्मीदवार आरके महाजन कुतें पर पीएम नरेंद्र मोदी की तस्वीर लगाकर प्रचार कर रहे थे। इससे वे पूरे चुनाव सुविधियों में रहे। उन्होंने चुनाव में 75 हजार रुपए खर्च किए हैं।

निर्दलीय कीर ने कहा- पत्नी बीमार थीं, इसलिए प्रचार नहीं कर सका- पूरे चुनाव में एक रुपया भी खर्च नहीं करने वाले निर्दलीय कैडिडेट राजेश कीर ने बताया कि चुनाव के दौरान ही पत्नी की तबीयत खराब हो गई। इस कारण उन्हें एक्स में भर्ती कराया गया। इसलिए चुनाव में प्रचार नहीं कर सका और खर्च नहीं हुआ।

इधर, निर्दलीय भारती यादव ने भी चुनाव में 1 लाख 28 हजार रुपए का खर्च बताया है। हालांकि, उनके पास नगद और कैश मिलाकर 1.30 लाख रुपए ही थे। यह जानकारी उन्होंने नामांकन भरते समय शपथ पत्र में दी थी। उनसे जब खर्च की गई राशि के बारे में पूछा गया तो उन्होंने घरेलू काम में व्यस्त होने का हवाला देकर कॉल डिक्लेन्ट कर दी।

मेपकास्ट में मनाया गया राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम अपना अभीष्ट प्राप्त कर सकते हैं- डॉ अनिल कोठारी

- वर्तमान समय नवीन प्रौद्योगिकी को देश अनुकूल करने का है- डॉ अनिल कोठारी
- तकनीकी आम जीवन को सरल बनाती है - डॉ मुकेश शर्मा
- विशिष्ट व्याख्यान एवं हैड्स ऑन गतिविधियाँ आयोजित की गयी ।



कि तकनीकी ही हमें भविष्य की दिशा दिखाती है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हमारी प्राचीन तकनीकी और गौरवशाली परंपरा को अद्यतन तकनीकी से समायोजित करते हुए नवीन विज्ञान को देशानुकूल करें। उन्होंने कहा कि मेपकास्ट नए कार्यक्रमों एवं योजनाओं के साथ पूरे प्रदेश में तकनीकी के क्षेत्र में सभी के लिए अवसर प्रदान करने का कार्य कर रहा है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्रिसप के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ मुकेश शर्मा ने कहा कि तकनीकी के दो भाग हैं - एक सैद्धांतिक और दूसरा व्यावहारिक पक्ष। मॉडल और सिमुलेशन के जरिए हम तकनीकी को करीब से जान सकते हैं। हम आई टी से संबंधित तकनीकी में विश्व में नंबर एक है और विश्व के लगभग सभी विकसित देशों में भारत के ही विशेषज्ञ आईटी संबंधी तकनीकी में काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे समाज में तकनीकी का बहुत ही महत्व है और यह तकनीकी हमारे जीवन को सरल बनाने का काम करती है।

इस अवसर पर मेपकास्ट के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी लोकव्यापीकरण योजना के प्रभारी एवं प्रधान वैज्ञानिक विकास शेण्डे ने बताया कि तकनीकी की दिशा में हमारा

देश बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। आई पी रैंकिंग एवं इनोवेशन रैंकिंग में हम क्रमशः 42 और 40 स्थान पर हैं। कोरोना जैसी विषम कालीन परिस्थितियों में हमने अपनी देशज तकनीकी के माध्यम से बने टीके एवं जेनेरिक दवाइयों के माध्यम से न केवल इसका सामना किया अपितु विश्व के कई देशों में अपनी इस तकनीकी का निर्यात किया। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में 2014 में स्टार्टअप की संख्या 1 थी जो कि बढ़कर 174 हो चुकी है। उन्होंने बताया कि पेटेंट फाइलिंग में भी हमारी संख्या बढ़ कर नब्बे हजार प्रतिवर्ष हो चुकी है।

तकनीकी आधारित हैड्स ऑन कार्यशाला आयोजित- इस अवसर पर मेपकास्ट में तकनीकी आधारित हैड्स ऑन कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें की आईआईटी गांधीनगर के विशेषज्ञ श्री पंकज द्वारा विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से तकनीकी को समझाया गया। श्री पंकज ने बताया कि इन प्रयोगों के माध्यम से हम अपनी पाठ्य सामग्री के सिद्धांतों को न केवल समझ सकते हैं अपितु उसको अत्यंत ही रुचिकर बना सकते हैं।

इन तकनीकी प्रयोगों पर विद्यार्थियों ने लेी

अनुमान है, इसलिए बादलों की गरज-चमक के दौरान लोगों को सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी गई है।

प्रदेश में अगले 3 दिन ऐसा मौसम

- 12 मई- राजगढ़, नर्मदापुरम, बैतुल, छिंदवाड़ा, पांडुर्णा, सिवनी, मंडला और बालाघाट में बारिश का अलर्ट है। आलीराजपुर, झाबुआ, बड़वानी, धार, बुरहानपुर, खंडवा, हरदा, देवास, शाजापुर, भोपाल, नरसिंहपुर, जबलपुर में भी आंधी, बारिश का दौर रहेगा। रतलाम, उज्जैन, इंदौर, खरगोन, सीहोर, रायसेन, विदिशा, गुना, सागर, दमोह, टीकमगढ़, निवाड़ी, छतरपुर, पन्ना, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरीली, शहडोल, अनूपपुर, डिंडोरी, उमरिया, कटनी में भी मौसम बदला रहेगा।
- 13 मई- प्रदेश के सभी जिलों में मौसम बदला रहेगा। कहीं बादल रहेंगे तो कहीं आंधी भी चल सकती है।
- 14 मई- प्रदेश के कुछ जिलों में ही मौसम बदला रहेगा। नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, इंदौर, देवास, सीहोर, पांडुर्णा, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, अनूपपुर, दमोह, पन्ना, सतना, मेहर, रीवा, मऊगंज और अनूपपुर में हल्की बारिश हो सकती है।

पूर्व सीएम शिवराज ने मां कालिका के किए दर्शन

- रतलाम में लगाए दो पेड़, फावड़ा उठाकर अपने हाथों से डाली मिट्टी, कहा- कांग्रेस अब कहीं भी नहीं बचने वाली



रतलाम (नप्र)। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने शनिवार को रतलाम में मां कालिका माता मंदिर पहुंच दर्शन किए। पूर्व सीएम ने कालिका माता मंदिर परिसर उद्यान में अपने हाथों से दो पेड़ लगाए। हाथ व फावड़े से गड्ढे में मिट्टी डाली, पानी पिलाया। पेड़ों का ध्यान रखने को कहा। मीडिया से चर्चा करते हुए कहा कि कांग्रेस अब कहीं नहीं बचने वाली है। दरअसल पूर्व सीएम शनिवार की रात रतलाम लोकसभा की सीलाना व रतलाम ग्रामीण के बिरमावल में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में सभा करने आए थे। देर रात रतलाम पहुंचे। रात्रि विश्राम सफिट हाउस में किया। सुबह रवाना होने के पहले वह पैलेस रोड स्थित पूर्व मंत्री हिम्मत कोठारी के निवास पर पहुंचे। यहां पर कोठारी व उनके परिवार समेत मौजूद भाजपा पदाधिकारियों ने स्वागत किया। करीब 15 से 20 मिनट रुके। यहां पर पूर्व मंत्री कोठारी ने भगवान राम व सीता की प्रतिमा चौहान को भेंट की। फिर सामने स्थित अर्भाविप के कार्यालय पर भी गए। रवाना होने के दौरान कई भाजिया भी अपने मामा से मिलने पहुंची। पूर्व सीएम के साथ सेल्फी भी ली। इसके बाद चौहान कालिका माता मंदिर पहुंचे। मंदिर के गर्भगृह में जाकर मां कालिका के दर्शन कर पूजा की। मंदिर परिसर के बगीचे में भाजपा पदाधिकारियों के साथ दो पेड़ भी लगाए। इसके बाद वह खाचरोद के लिए रवाना हो गए।

कांग्रेस अब कहीं भी नहीं बचने वाली है

मां कालिका के दर्शन के बाद मीडिया से चर्चा करते हुए पूर्व सीएम चौहान ने कहा कि मां से प्रार्थना कि है कि सब सुखी रहे, सब निरोग हो, सबका मंगल हो, सबका कल्याण हो। इस देश के लिए जरूरी है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। फिर से वह प्रधानमंत्री बने। मेरे लिए मांगा धन, बुद्धि, विद्या, बल, स्वर्ग व मुक्ति भी नहीं चाहिए। मुझे जनता के बीच बीच पैदा करना। ताकि बारंबार इनकी सेवा कर सकूंगा। लोकसभा चुनाव को लेकर कहा कि ना चुनौती है। उम्मीद नहीं विश्वास है कि प्रदेश में भाजपा सभी 29 सीटें जितेगी। डबल इंजन सरकार के काम मोदी जी के प्रति श्रद्धा, भक्ति, विश्वास है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक



कला हमेशा से एक पहेली रही है और हमेशा पहेली ही रहेगी। कला में यात्रा का आनंद भी तभी तक है जब तक वो पहेली है। पहेली से पर्दा उठते ही कला अपने अस्तित्व और पहचान को तड़प उठती है। जैसा की सभी को पता है कि भारतीय कला मौसम की भांति अपनी यात्रा तय करती हुई प्रतीत होती है जहाँ पतझड़ है तो बसंत भी है, जहाँ आनंद है तो अभिव्यक्ति को व्याकुल तड़प भी है, कलाकार का संघर्ष भी है। कलाकार, साहित्यकार या और भी अभिव्यक्ति के द्वंद्व से जुझते माध्यम वाले लोग जो ललित कला के मानकों को पूरा करते हैं, एक दूसरे से भिन्न नहीं हो सकते। कभी-कभी कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपनी बात, अपने भाव को एक माध्यम में अभिव्यक्त कर लेने के बाद भी तड़प रहे होते हैं,

मानवीय भावनाओं को अभिव्यक्त करने हेतु कई दफा एक माध्यम कम पड़ जाता है, सर्जक अपनी बात अपने रनिंग माध्यम में पूरी तरह नहीं कह पाता या कह तो पाता है पर संतुष्ट नहीं हो पाता, कहीं और पहुँच कर छटपटाहट में ही सही पर अपनी बात बहुत ही स्पष्ट तरीके से कहना चाहता है और एक साथ कई माध्यमों में सक्रिय हो जाता है और कभी-कभी उसे साध पाने में सफल भी हो जाता है पर सभी सफल होंगे संशय युक्त है। रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य ने लोगों को आकर्षित तो किया ही, बेचैन भी किया पर साहित्य और अन्य माध्यमों को साध लेने के बाद भी वो बेचैन ही रहे। एक साथ कई माध्यमों को साध पाना उनकी विशेषता रही है पर असंतुष्टि उन्हें और भी द्वार खोलने हेतु प्रेरित करती रही। रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य

मदर्साडे

नलिन खोईवाल



जब बच्चा बोलना सीखता है तो उसकी तुलती जुबान पर सबसे पहला शब्द होता है , ‘ मां ’ कितना सुकून देता है ये शब्द । एक ही शब्द में सारी सृष्टि समाई है । इसमें समंदर की अथाह गहराइयाँ हैं , नीलाकाश की अनंत सीमाएं हैं और सारे संसार का सुख समाया है ।

सारे संसार का धन , सुख , वैभव एक तरफ और मां ... मां के सामने ये सारी चीजें तुच्छ हैं । जिसके पास ‘मां ’ है , वह दुनिया का सबसे दौलतमंद और खुशनसीब इंसान है व दुनिया के सारे तख्तों - ताज उसके कदमों में हैं । मुझे गर्व है कि तुम दुनिया की सबसे खूबसूरत और सबसे अच्छी माँ हो । रिश्ता तेरा मेरा ऐसा जो कृष्ण -यशोदा , कौशल्या - राम , फातिमा - हुसैन और ईसा का मरियम से था । दुनिया का सबसे श्रेष्ठ , मधुर , पाकीजा और अटूट रिश्ता है यह । इस रिश्ते को न तो शमशीर काट सकती हैं , न पानी इसे मिटा सकता है , न अग्नि इसे जला सकती है और न ही कड़वाहटें ही इसमें दरार डाल सकती हैं । ये रिश्ता अमिट है और अमृत कलश की तरह है ।

रिश्ता तेरा - मेरा सबसे है आला । तू मेरी मैया मैं हूँ तेरा लाला ।। माँ के ममत्व की एक बूंद अमृत के समुद्र से ज्यादा मीठी है । बच्चे का भाग्य सदैव उसकी माँ की कृति है तथा मां का हृदय बच्चे की पाठशाला है तथा मां का कोमल हृदय प्रेम , मैत्री , अपनत्व , त्याग , समर्पण , क्षमा और शांति का निकेतन है । %मां% जब मैं बीमार होता था तो तुझे नींद नहीं आती थी . मुझे छींक आती तो धड़कन तेरी रुक जाती थी । मेरे अच्छा होने की तूने किस-किस भगवान से मन्नत नहीं मांगी , कहीं-कहीं मत्था नहीं टेका और ‘माँ ’ तेरी

टैगोर की स्वच्छंद कलाकृतियाँ और कला में आधुनिक सोच

से तो समाज वाकिफ है पर उन्हीं का एक रूप जो कलाकार के रूप में फला-फूला पर चर्चा का इरादा है। साहित्य, संस्कृति एवं कला संपन्नता से भरपुरा परिवार, प्रकृति के गहराई को गहनता से आत्मसात करने वाला घर, नैसर्गिकता के साविध्य में रहन-सहन और अंकन के साथ ही तमाम दर्शनों पर पक्ष-विपक्ष दोनों स्तरों पर लगातार चर्चा होना, नये-नये विषयों को नये तरीकों से समझना, विदेशी कलाकारों - साहित्यकारों का घर पर आना जाना निरंतर जारी था। गुरुदेव विधाओं में भी सम्पन्न थे। लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार, समाजसेवी, कलाकार आदि उनके कई रूप थे। उनके देश-विदेश की यात्राएं तो जगजाहिर हैं फलतः भारतीय कलाकृतियों के साथ ही विदेशी कृतियों से भी साक्षात्कार होता रहता था। उम्र के जिस पड़ाव पर लोग सेवानिवृत्त होते हैं उसके भी कुछ वर्ष बाद गुरुदेव का कला में प्रवेश करना उस उम्र में भी उनके युवा मन को दर्शाता है। उनका रहन-सहन, भेष-भूषा एक दम भव्य था और भव्य था उनका विचार।

कला में उनका प्रवेश इतना जबरदस्त रहा, इतना मौलिक रहा, इतना भावयुक्त रहा, बंधनों से इतना परे रहा कि खलक विदेश तक पहुँच गई हालाँकि शुरू में भारतीय खेमा इनके कृतियों को आधुनिक मानने में संदेह करता रहा, कृतियाँ हैं भी या नहीं इस पर भी संदेह रहा, रवीन्द्र नाथ कलाकार हैं भी या नहीं इस पर भी खूब मतभेद रहा, युद्ध स्तर पर पक्ष-विपक्ष में द्वंद्व रहा। राजा रवि वर्मा, अवनींद्रनाथ, अमृता



शेरगिल सहित और भी कुछ कलाकारों के साथ तुलना तत्कालीन कला जगत हेतु ठीक नहीं था जबकि रवीन्द्र नाथ तो इन सब से अलग एक विशेष पथ पर चल रहे थे जहाँ खूबसूरती से इतर बदसूरती में भी भाव को महत्व दिया जा रहा था।

जल्दी ही सब कुछ बदल गया और टैगोर के कृतियों की चर्चा जोर-शोर से देश एव विदेशों में होनी लगी।

जबकि कलाकार किसी ग्रंथ या कथानक पर सृजन कर रहे थे, गुरुदेव चित्रों के व्याख्या के पक्ष में नहीं थे बल्कि चाहते थे कि दर्शक कृतियों के साथ अपनी यात्रा खुद करें और पहुँचे जहाँ तक उनकी क्षमता है या कृति की क्षमता है अपने पास तक दर्शकों को ला पाने की। मई 1930 में उनकी पहली प्रदर्शनी पेरिस में हुई उसके तुरंत बाद से ही मात्र एक वर्ष में पश्चिम के कई प्रमुख शहरों में उनके चित्र प्रदर्शित हुए।

कला अकादमिक बंधनों से परे की वस्तु है। तमाम ऐसी बातें जो व्यावहारिक रूप से थोपी जाती रही हैं से कला में बाधा ही होगी। टैगोर की कला भी बंधनों से परे खुद का मौलिक सृजन है या हो सकता है कि विचारों का जो सागर उनके मन में था, जिसकी पूर्णतः अभिव्यक्ति साहित्य में संभव न हो पा रहा हो और उन्हें व्यक्त करने हेतु कला का सहारा लेना पड़ा हो, खैर पूरी अभिव्यक्ति तो यहाँ भी संभव नहीं फिर भी उनकी कृतियाँ उस समय ही अपने आप को सबसे अलग खड़ी कर पाने में सक्षम हो गई थीं। माध्यम, विचार, टेक्स्चर, धरातल आदि कहीं भी सीमा में बंधकर उन्होंने काम नहीं किया। मां-शिशु कृति में आकृति स्पष्टता

भले न हो पर भाव स्पष्टता पूर्णतः दर्शित है। स्याही से कागज पर बने इस कृति में बच्चे को गोद में लिए माँ का व्यावहारिक रूप भले ही न दिखा हो पर माँ और बच्चे के बीच का निश्छल प्रेम छलक उठा है। रंग, शैली सब भिन्न है। लम्बे मुँह और नाक वाली कृतियाँ एक बारगी भले भद्दी दिखाई देती हों लेकिन जब देर तक

कृति को निहारते हैं, कृति दर्शन हेतु अनंत के यात्रा पर निकलते हैं, मानवीय, मनगढ़ंत पैमानों से बाहर निकलते हैं तो पाते हैं कि रवींद्रनाथ टैगोर साहित्य से ज्यादा यहाँ पर दर्शन की बात करते हैं। कभी भी चटख रंगों का प्रयोग न करना उनके गंभीर विषयों को गंभीरता से दर्शाना दिखाता है।

चौक या कोयला के साथ दीवार पर जैसे कोई बच्चा खेलता हो और अनजाने ही सही भावयुक्त रेखाएं बन जाती हों जिसमें देर तक ध्यान लगाकर देखने पर एक अजीब सी यात्रा का दर्शन होता हो कुछ ऐसी ही कभी-कभी नजर आने लगती है गुरुदेव की कृतियाँ, पर स्वच्छंद हो घने रंगों के साथ विशेषतः डुडलिंग वाले स्टाइल में उनके कृतियों की एक अलग दुनिया है। यहीं से और कलाकारों हेतु द्वार भी खुलता दिखाई देने लगता है और बाद में तो आधुनिकता के नाम पर एक से बढ़कर एक कृतियों की बाढ़ सी आ गई है। कलाकृतियाँ अतिआधुनिकता के चपेट में आती गई हैं। एक से बढ़कर एक शैली का विकास समय के साथ ही भारतीय कला को और समृद्धि की तरफ ले गई है पर किसी-किसी क्षेत्र में गिरावट भी देखी जा सकती है।

1861 में जन्में गुरुदेव के कृतियों में बाह्य सौंदर्य की भले कमी हो पर कृति से संवाद में दर्शक अनायास ही विचारों, भावों, सौंदर्य आदि के आगोश में समा जाता है। प्रकृति, पक्षी, मानव सभी आकृतियों पर विचित्रता के आरोप भी लगे पर कला में क्रांति हेतु ये भी एक जरूरी कार्य था जो उनके द्वारा शुरू हुआ। टैगोर जी कृतियों को शीर्षकहीन रखने के पक्षधर रहे हैं ताकि दर्शक पगदंडी के सहारे यात्रा ना कर खुद ही स्वतंत्र मार्ग पर, स्वतंत्र भाव के साथ स्वच्छंद रूप से विचरण कर सके और आत्मसात कर सके कृतियों को।

ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी



दुआओं में तो जादू का असर है । मैं गिरता था तो चोट तुझे लगती थी , मैं रोता था तो सारी कायनात हिल जाती थी और मैं भूखा होता था ,तब माँ तू अपने मुंह का निवाला मुझे देकर खुद भूखी सो जाती थी , ये कैसा

अनूठा त्याग है , माँ । तेरे हाथ की बनाई गोल-गोल रोटियों में मुझे सचमुच भगवान के दर्शन हो जाता करते थे । इन गोल - गोल रोटियों में ही जिंदगी का सार समाया है , इन्हीं में माँ मुझे चांद - सूरज और संपूर्ण

ब्रह्मांड के दर्शन हो जाते हैं । रोटियों की सौंधी - सौंधी महक में जन्नत का नशा है । मैं जब भी ‘मां ’ रोटी को देखता हूँ तो मुझे तेरी बहुत याद आती है , तेरी शक्ल मुझे रोटी में दिखती है।‘मां ’ की ममता का कोई मोल नहीं है , वह अनमोल है । दुनिया का कितना भी ताकतवर व्यक्ति इतना सामर्थ्यवान हरगिज नहीं , जो तेरे दूध का कर्ज चुका सके ।

‘ मां ’ तूने ही तो सिखाया है कि विपरीत परिस्थितियों को भी किस तरह अपने अनुकूल बनाया जाता है , कमजोर , असहाय , निःशक्त और जरूरतमंदों की सदा सेवा व मदद करना , ‘ सर्वधर्म समभाव ’, वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा में विश्वास करना , कभी किसी का बुरा न करना , न बुरा देखना , न सुनना और न बुरा कहना । नेक राह पर चलना , गम में भी सदा मुस्कुराना और अपना काम ईमानदारी से व समय पर करना । एहसास फरामोश कभी मत बने , सकारात्मक सोचो , बच्चों से एवं प्राणी मात्र से प्रेम करो , नमक का कर्ज अदा करो और दिल में देश प्रेम का जज्बा सदा रखो , कर्तव्यों का सदा पालन करो ।

माँ , घर का उजाला । माँ , जीवन की पाठशाला ।। माँ , बांटती अमृत पीती हाला । माँ , काशी , काबा और शिवाला ।। माँ , बिखरे मोतिन की माला । माँ , अमृत का प्याला ।।

कविता

अरुण अर्णव खरे



अम्माँ

गेरु से चौक पूर कर, सजा रँगौली द्वार ।
हर दिन अम्माँ के लिए, होता था त्योहार ।।

उठतीं पहले भोर से, सोतीं सबके बाद ।
न थकने का था मिला, उनको देव-प्रसाद ।।

पढ़ बाबू की डायरी, खुला राज ये आप ।
अम्माँ भी थी चटपटी, जैसे आलूचाप ।।

अम्मा हुई पचास की, मिला नहीं विश्राम ।
अम्माँ के साथी हुए, मूव, त्रिफला, बाम ।।

आया जब मुश्किल समय, दस्तक देने द्वार ।
चढ़ा चटकनी बन गई, अम्माँ परहेदार ।।

धोती सूती छह गजी, अम्माँ की पोशाक ।
एक छोर आँसू पुछे, दूजे बहती नाक ।।

अम्मा ने हरदम किया, सबका ही सम्मान ।
रिश्तों में देखा नहीं, नफा और नुकसान ।।

खुद से कभी डिगा नहीं, अम्मा का विश्वास ।
अम्मा रख कर खुश रही, पीछा अपने पास ।।

पाँच बरस पूरे हुए, गए गगन के पाथ ।
यादों में अम्माँ रहीं, सदा हमारे साथ ।।

अम्माँ के निर्वाण से, रिक्त हुआ संसार ।
थाली से गायब हुए, चटनी और अचार ।।

अम्माँ के जाते, हुए, सब इतने असहाय ।
दिन-दिन भर दिन भूखे रहे, मिट्टू, कुत्ता, गाय ।।

अम्माँ जी तुम क्या गई, हम भूले परवाज ।
छूट गए त्योहार कुछ, बदले रीति रिवाज ।।

पँजरी का लगा नहीं, ऐसा रहा संयोग ।
अम्माँ जी के बाद फिर, लहू जी को भोग ।।

अम्मा से सीखा यही, सारे धरम समान ।
तुलसी, मीरा को पढ़ा, साथ पढ़े रसखान ।।

जिम्मेदारियों और स्पर्धा की पड़ताल है - ब्रोकन न्यूज

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)



तया न्यूज चैनल एक जनोन्मुखी मीडिया है ? क्या उसके कारोबारी स्वरूप और टीआरपी की स्पर्धा के बीच उसकी जनोन्मुखी छवि को बचाये रखा जा सकता है ? ऐसे बीसियों सवाल के जवाब की खोज में है वेबसिरिज - ‘ ब्रोकन न्यूज ’ । इस सिरिज की समीक्षा के पहले यदि इसके जोनर की बात करें तो देश में सूचना प्रौद्यौगिकी (इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी) की अवस्थिति अजीब-सी है । यह न संघ की सूची में है, न राज्य की सूची में और न ही समवर्ती सूची में। इसे अवशिष्ट सूची में डाल दिया गया है। वर्ष 2000 में केंद्र ने सूचना तकनीक कानून (आईटी एक्ट) लागू किया था और कानून की धारा 69 में प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करके केंद्र या राज्य सरकार किसी भी व्यक्ति के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जैसे कि कंप्यूटर या मोबाइल आदि में संग्रहीत सूचनाएं जान सकती है। जी-फाईव पर इस हफ्ते से प्रसारित हो रही वेबसिरिज ‘ ब्रोकेन न्यूज ’ का दूसरा सीजन इसी तरह के एक ‘अम्बेला कानून’ पर छिड़ी बहस से शुरू होता है। देश में चुनाव का माहौल है और ये सिरिज न्यूज चैनलों के भीतर की दुनिया में इस कदर झाँकती है कि अगर इस सिरिज का ढंग से प्रचारित किया गया होता तो इसके कथानक को लेकर ही बवाल खड़ा हो चुका होता जो सैम पित्रोदा के नान इश्यू मुद्दे पर बतोलेबाजी से ज्यादा प्रासंगिक होता ।

बीबीसी की वेबसिरिज ‘प्रेस’ के इस हिन्दी प्रस्तुतीकरण में देश में इन

दिनों घटी तमाम घटनाएं एक के बाद एक अलग अलग सन्दर्भ और दृष्टिकोण में सामने आती है। आरम्भ में लगा कि यह दो न्यूज चैनल की टीआरपी की प्रतिस्पर्धा की पारम्परिक कहानी है लेकिन जैसे जैसे सिरिज आगे बढ़ी है, यह सच सामने आया कि न्यूज चैनल का कारोबार अब टीआरपी की प्रतिस्पर्धा से कहीं आगे निकल चुका है। कारोबारी घरानों के अपने अपने स्वार्थों के तहत न्यूज चैनल को अपने कब्जे में लेने की यह कहानी आज के न्यूज चैनल्स की तथ्यकथा को बड़े परिपक्व तरीके से प्रस्तुत किया है । इस कहानी में जो दो न्यूज चैनल्स हैं वो देश के किसी भी कोने में हो सकते हैं। सिरिज में बार बार बारह करोड़ आबादी वाले राज्य का उल्लेख और वलों सी लिंक का दिखना यह बताता है कि यह दोनों चैनल महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई के है । सिरिज की कहानी में वह सब कुछ है जिसे दर्शक इन दिनों दिन-प्रतिदिन देखते हैं। इसमें डाटा चोरी है, लोगों को ट्रेल करने वाली वाटर आर्मी है, चुनावी चन्दे का सवाल है, आत्महत्या है, एप के जरिये लोगों को ठगने वाली कहानी है और भी तमाम घोटाले और कारनामे भी हैं।

तकनीकी तौर पर यह एक कमजोर सिरिज है और अपनी कहानी, पटकथा और संवादों में कमजोर होने के कारण वेबसिरिज ‘ब्रोकेन न्यूज ’ दूसरे सीजन में वैसा असर ला नहीं पाती है, जिसकी उम्मीद इसके कलाकारों की मौजूदगी के चलते इससे दर्शकों को पहले सीजन में भी

रही थी। सिरिज का कला निर्देशन औसत है। पार्श्वसंगीत भी इसकी मदद नहीं कर पाता है। बॉम्बे हाईकोर्ट को मुंबई हाईकोर्ट लिखना, बिल को बिल लिखना, इसकी ब्रांड वैल्यू को बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। इस वेबसिरिज’ के दूसरे सीजन को लिखते समय सब कुछ समेट



लेने की जल्दबाजी साफ दिखती है। किसी एक घटना पर रुक कर न उसे समझने की कोशिश है और न ही उसकी गहराई में जाकर इसके देश पर पड़ सकने वाले असर को ढंग से समझने का प्रयास ही किया गया है। झगड़ा दो ऐसे न्यूज चैनल के लोगों के बीच है जो हिन्दी के हैं। अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी अपने टिकर, हेडर, न्यूज फ्लैश और बैड्स में लिखते हैं और ये हिन्दी में भी सही से लिखी नहीं गई है। संवादों में

‘सुरक्षितता’ जैसे शब्द एक तरह से हिन्दी की हँसी उड़ाते हैं। एक तरफ सरकार की गोद में बैठा एक न्यूज चैनल का सर्वेसर्वा है, जो अपने शो की एंकरिंग खुद ही करता है और, दूसरी तरफ वह रिपोर्टर है जो पिछले सीजन में इसी दुश्मनी के चलते जेल चली गई थी। लेकिन, खुद को तुरम खां समझने वाले इन बड़े नाम वाले एंकरस की हैसियत कारोबारी घरानों को चलाने वालों के सामने क्या है, इसका खुलासा भी सिरिज करती चलती है।

सिरिज में जयदीप अहलावत, श्रिया पिलगांवकर और सोनाली बेंद्रे पर अभिनय के मोर्चे पर कुछ कर गुजरने की पूरी जिम्मेदारी थी और अभिनय के मोर्चे पर इन तीनों ने सिरिज को पूरी तरह सम्भाला है। जयदीप अहलावत की अदाकारी के रंग तो इसमें खुलकर बिखरे हैं। सरकारी पक्ष का न्यूज चैनल चलाने वाले की बदनीयती उनके किरदार में घुल गई है। घरेलू मोर्चे पर उनका चरित्र एक अलग तनाव से गुजरता है। लेकिन, इस सबके बीच दर्शकों को बार बार यह याद दिलाया जाता है कि ये जहनी तौर पर ईमानदार हैं, बस हालात न उसे बेईमानी के दलदल में धकेल दिया है। जयदीप जैसे जानदार अदाकार के सामने श्रिया पिलगांवकर ने पूरा दम लगाकर मोर्चा सम्भाला है। जैसे को तैसा, वाली राह पर चल निकला उनका चरित्र सिरिज का तनाव इसके शिखर पर ले जाने की कोशिश करता रहता है और इन दो चरम बिन्दुओं के बीच का सन्तुलन बनाने वाले चरित्र में सोनाली बेंद्रे ने भी कमाल का काम किया है।

सिरिज की कहानी ‘साइलेंस 2’ की ही तरह तेज रफ्तार है। दर्शकों का ध्यान लगातार स्क्रीन पर बना रहे, इसके लिए घटनाएं भी तेजी से घटती हैं,लेकिन इस अफरातफरी में सिरिज की पटकथा बहुत कुछ बताने में कुछ भी ठोस तरीके से कहने से चूक जाती है। कथा, पटकथा और संवादों के लिहाज से सिरिज कमजोर है। सिरिज की शूटिंग चूँकि ज्यादातर इनडोर ही है लिहाजा समाचारों की दुनिया की बजाय ये समाचार वाचकों की दुनिया की सिरिज बनकर रह जाती है।



मतदाता जागरूकता अंतर्गत वीडियो मैकिंग के परिणाम घोषित धार की शुभी शर्मा प्रथम, ग्वालियर की साक्षी श्रोत्रिय द्वितीय स्थान पर रही



धार। युवा मतदात भारत भाग्य विधाता प्रतियोगिता अंतर्गत वीडिया मैकिंग प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किये गए। इसमें धार की शुभी शर्मा प्रथम स्थान पर रही, ग्वालियर की साक्षी श्रोत्रिय द्वितीय स्थान पर तथा तृतीय स्थान पर 3 प्रतिभागी रहे। जिनमें धार की सोनालिका निगम गुना के शिवा रघुवंशी एवं धार के अदीब खान शामिल है।

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी प्रियंक मिश्रा ने मतदाता जागरूकता अंतर्गत बनाए गए वीडियो में पुरस्कृत प्रतिभागियों को बधाई देते हुए प्रमाण पत्र एवं चेक का वितरण किया। प्रतियोगिता का विषय “युवाओं को मतदान क्यों करना चाहिए” इस पर एक-एक क्लिप गुगल पर अपलोड की गई है। वीडियो का आकलन कर 5 सदस्य की टीम द्वारा किया गया। इनमें प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार 15 हजार (एक प्रतिभागी),द्वितीय को 10 (एक प्रतिभागी) हजार तथा तृतीय स्थान पर रहे प्रतिभागी को 5 हजार रूपए (तीन प्रतिभागी) को दिया गया।

कॉलेज चौक से आभाश्री तक स्थाई अतिक्रमण हटेगा

कलेक्टर ने निरीक्षण कर नपा को दिए निर्देश

बैतूल। जेएच कॉलेज से होटल आभाश्री तक बने टू-लेन के आसपास वर्षों से जमे अतिक्रमणकारियों का अतिक्रमण दो दिनों में हटाने के लिए कलेक्टर ने नपा को आदेशित किया है। सड़क मार्ग बनाने में हो रही परेशानी की समस्याओं से निजात दिलाने के लिए कलेक्टर के निर्देश पर नगरपालिका दोनों ओर के अतिक्रमण को हटाने की तैयारी कर चुकी है। आधा सैकड़ से अधिक अतिक्रमणकारियों को दो दिन की मोहलत दी गई है। समय पर अतिक्रमण न हटाने पर सोमवार को पूरी दुकानें सख्ती



से हटवाई जाएगी। नगरपालिका भविष्य में अतिक्रमणकारियों से बचने के लिए दोनों ओर फुटपाथ का भी निर्माण करेगी। यह भी निर्णय आचार संहिता के बाद लिए जाने की संभावना है। नपा ने कॉलेज चौक से प्राइमरी स्कूल तक टूलेन सड़क बनाने का निर्णय लिया था। हालांकि होटल आभाश्री से प्राइमरी स्कूल तक टूलेन सड़क नहीं बनी है, इसके लिए काम जारी है। कॉलेज चौक से आभाश्री के पहले तक ड्रिवाइङरुकु सड़क बनने से इस मार्ग से यातायात सुलभ हुआ है। इतना जरूर है कि ड्रिवाइङर का स्पेज छेड़ने से कुछ दुर्घटनाएं हो रही हैं, लेकिन सड़क तक बाजार लगने और दुकानें होने के कारण यातायात बाधित होने की समस्या आम बात हो गई है। एक करोड़ की लागत से सड़क बनाने के बाद भी नपा के पास दोनों ओर 15-15 फीट की जमीन बची है। इसी जगह अतिक्रमणकारियों ने कहीं स्थाई, तो कहीं अस्थायी, अतिक्रमण कर टूलेन की सुंदरता पर ग्रहण लगा दिया है।

कलेक्टर ने लगाई फटकार- कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने कॉलेज चौक पर चल रहे कुछ निर्माण कार्य के अलावा जेएच कॉलेज में मतगणना स्थल का निरीक्षण किया। बताया जाता है कि इस दौरान उन्हें वनिता समाज का रास्ता अतिक्रमणकारियों की वजह से बंद होने की शिकायत की गई। इसके अलावा कलेक्टर ने भी जेएच कॉलेज के सामने बेजा अतिक्रमण देखकर नपा के राजस्व अमले को फटकार लगाई।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने नपा के राजस्व अमले को स्पष्ट हिदायत दी कि कॉलेज चौक से दोनों ओर के अतिक्रमण दो दिन में हटाए जाए। कलेक्टर के निर्देश मिलते ही नपा का राजस्व अमला मौके पर पहुंचा और सारे दुकानदारों को अल्टीमेटम दिया है कि रविवार शाम तक अपने अतिक्रमण हटा ले, अन्यथा सोमवार नपा अस्थायी अतिक्रमण जब्त कर लेगी।

फुटपाथ बनने से मिलेगा फायदा- नपा ने टूलेन बनाने के पहले 16-16 मीटर की सड़क दोनों ओर बना ली,लेकिन शेष बची जगह का उपयोग करने का प्लान नहीं बनाया। इसी वजह सड़क किनारे दोनों ओर इस मार्ग पर अतिक्रमण कर आधा सैकड़ से अधिक दुकानें लग गई है। कलेक्टर के निर्देश के बाद नपा भविष्य में स्थाई अतिक्रमण न होने के लिए फुटपाथ बनाएगी, ताकि हाथठेले पर सुबह दुकानें लगाकर शाम को घर जाने वाले छोटे दुकानदारों को रोजगार का भी मौका मिले, लेकिन पक्का अतिक्रमण करने वालों को अब कलेक्टर के निर्देश पर अब नपा मोहलत देने के मूड में नहीं है। संभावना है कि अगले माह आचार संहिता खत्म होने के बाद कॉलेज से आभाश्री तक स्थाई अतिक्रमण को हटाने के लिए नपा दोनों ओर फुटपाथ बनाने का निर्णय ले सकती है।

इनका कहना..

सुबह कलेक्टर साहब कॉलेज चौक और मतगणना स्थल का निरीक्षण करने आए थे। उन्होंने अतिक्रमण देखने के बाद नाराजगी जताई है। हमने राजस्व अमले से अतिक्रमण हटाने के लिए कहा है।

-नागेंद्र वागदे, उपयंत्री नपा बैतूल, कलेक्टर साहब के निर्देश पर कॉलेज चौक से पीएनबी के आगे तक लगाए गए अतिक्रमण को हटाने के लिए दो दिन का अल्टीमेटम दे दिया है। सोमवार तक अतिक्रमण नहीं हटाने पर सख्ती से कार्रवाई की जाएगी।

- ब्रजगोपाल परते, राजस्व निरीक्षक नपा बैतूल,

जनपद

विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति के लिए मोदी को फिर प्रधानमंत्री बनाएं युवा: विष्णुदत्त शर्मा

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने सरदारपुर में नवमतदाता सम्मेलन को किया संबोधित



धार। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने शनिवार को लोकसभा क्षेत्र के सरदारपुर में आयोजित नवमतदाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विजन और संकल्प है कि 2047 तक देश विकसित भारत बनेगा और दुनिया का नेतृत्व करेगा। आज जो नवमतदाता पहली बार वोट डालने जा रहे हैं और आज के युवा ही 2047 के विकसित भारत का नेतृत्व करेंगे। ये चुनाव साधारण चुनाव नहीं, बल्कि विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति का चुनाव है। नवमतदाता विकसित भारत के संकल्प की पूर्ति के लिए कमल का बटन दबाएं और नरेंद्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाएं।

देशद्रोहियों का समर्थन करने वालों को जवाब दें युवा- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि धार-झाबुआ की धरती राणा बख्तावर सिंह, टंट्या मामा और चंद्रशेखर आजाद जैसे अमर शहीदों की भूमि है, जिन्होंने देश की आजादी के लिए, देश की आन-बान-शान के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। लेकिन कांग्रेस पार्टी कन्हैया कुमार और उन देशद्रोहियों के साथ खड़ी है, जो भारतमाता के टुकड़े करने के नारे लगाते हैं। वहीं, गांधी परिवार के सिपहसालार मणिशंकर अय्यर ये धमकी देते हैं कि हमें पाकिस्तान को सम्मान देना चाहिए, क्योंकि उसके पास परमाणु बम है। श्री शर्मा ने कहा कि मणिशंकर अय्यर का ये बयान 140 करोड़ भारतीयों को चुनौती है और देश के युवाओं का अपमान है। इसलिए भारतमाता के

सम्मान और मातृभूमि की रक्षा के लिए आने वाली 13 तारीख को कमल का बटन दबाएं। आपका वोट हमारे प्रधानमंत्री को इतनी ताकत देगा कि ऐसे कई परमाणु बम उनका कुछ नहीं कर पाएंगे।

मोदी ने बनाया आतंकवाद मुक्त भारत- श्री शर्मा ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री कहते हैं कि हमें आज के नवमतदाताओं को यह बताना चाहिए कि 2014 से पहले देश की स्थिति क्या थी? उस समय देश में कहीं भी आतंकी हमले हो जाते थे। विस्फोट होते थे। देश में सिमी के आतंकी सक्रिय थे और कश्मीर में पाकिस्तान प्रेरित आतंकवादी हमारी माता-बहनों का अपमान कर रहे थे। पाक सैनिक और आतंकी हमारे सैनिकों के सिर काटकर ले जाते थे और सरकार चुपचाप देखती रहती थी। भाजपा का नारा रहा है-जहां हुए बलिदान मुखर्जी वो कश्मीर हमारा है और सारा का सारा है। मोदी ने 2014 में प्रधानमंत्री बनते ही आतंकवाद की नकेल कसना शुरू कर दी। पाकिस्तान से आने वाले आतंकियों को उनके घर में घुसकर मारना शुरू किया। 2019 में प्रधानमंत्री बनते ही उन्होंने कश्मीर से धारा 370 हटा दी। आज देश में कहीं आतंकी विस्फोट नहीं होते। हमारी सेनाएं इतनी सक्षम हैं कि अगर कोई उनकी तरफ आंख उठाकर भी देखता है, तो वे दिल्ली से आदेश आने का इंतजार नहीं करती, मुंहतोड़ जवाब देती हैं।

भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने की राह पर बढ़ रहे प्रधानमंत्री- श्री शर्मा ने कहा कि आजादी के बाद कांग्रेस की सरकारें देश से गरीबी हटाओ के नारे लगाती रहीं, लेकिन किया कुछ नहीं। हर तरफ



भ्रष्टाचार का बोलबाला था। कांग्रेस के ही प्रधानमंत्री राजीव गांधी कहते थे कि दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं, लेकिन गरीब के पास तक सिर्फ 15 पैसे पहुंचते हैं, बाकी 85 पैसे दलालों, बिचौलियों की भेंट चढ़ जाते हैं। मोदी ने प्रधानमंत्री बनते ही जनधन खाते खोलने शुरू किए। तब कांग्रेस ने उनका मजाक उड़या। करोड़ों जनधन खाते खोले गए। आज सरकार हर साल किसान सम्मान निधि के 12000 रुपये देती है, लाइली बहनाओं को हर महीने 1250 रुपये देती है, लेकिन क्या किसी को एक रुपया भी कम मिला है? मोदी जी ने दलालों और बिचौलियों को खत्म कर दिया है और आज एक रुपया भेजते हैं, तो पूरा एक रुपया ही गरीब के खाते में पहुंचता है। प्रधानमंत्री मोदी तेजी के साथ भ्रष्टाचार मुक्त भारत के संकल्प की पूर्ति की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

राम विरोधियों, राष्ट्रद्रोहियों को अपने वोट की ताकत से उखाड़ फेंकें- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने कहा कि आप लोगों को जितनी बेसब्री से इस बात की प्रतीक्षा है कि धार की भोजशाला में माता सरस्वती कब विराजमान हों, उतनी ही बेसब्री से देश की जनता अयोध्या में भगवान राम का मंदिर बनने का इंतजार कर रही थी। बीते 500 सालों तक इसके लिए संघर्ष चला और लाखों लोगों ने अपना बलिदान दिया। देश की जनता इतनी बेचैन थी कि जनता ने ही बाबरी ढांचे को ढहा दिया। आंदोलन के दौरान हमारा नारा होता था-मंदिर वहीं बनाएंगे। कांग्रेस के लोग इसके मजाक उड़या करते थे कि ‘मंदिर वहीं बनाएंगे, पर तारीख नहीं

बताएंगे।’ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राम मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हुआ और 22 जनवरी की वो तारीख भी आ गई, जब मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो गई। इसका उत्सव आप सभी ने मनाया और अपने घरों में दीप भी जलाए। लेकिन कांग्रेसियों के पेट में दर्द होने लगा, मरीड़ उठने लगी। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए कांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं को भी निमंत्रण भेजे गए। लेकिन सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मि. बटोद्वार और कमलनाथ ने कहा कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का बहिष्कार करते हैं। ऐसा करके उन्होंने करोड़ों भारतीयों के आराध्य प्रभु श्रीराम का अपमान किया। भगवान राम का अपमान हमारा है और इसका बदला लेने के लिए आने वाले चुनाव में कमल का बटन दबाएं और राम विरोधियों तथा राष्ट्रद्रोहियों को इस भरती से उखाड़ फेंकें।

इस दौरान पार्टी के प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल, भाजपा जिला अध्यक्ष मनोज सोमानी, लोकसभा प्रभारी नंदकिशोर पाटीदार, लोकसभा संयोजक प्रभु राठौर, पूर्व विधायक वेल सिंह भूरिया, विधानसभा प्रभारी नरेश राजपुरोहित, जिला पदाधिकारी दीपक फेमस, श्रीमती जमुना भूरिया, मुकेश केवलजी,पूर्व जिला मंत्री संजय बघेल, हिमाशु अत्रिवाल, युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष जय सूर्या, मोर्चा महामंत्री कपिल यादव सहित विधानसभा के मंडल अध्यक्ष भाजपा के वरिष्ठ नेता मंचासीन रहे। संचालन सोहन पटेल ने किया। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

जय परशुराम और जय ब्रह्म के जयघोष के साथ निकाली अभूतपूर्व शोभायात्रा

ब्राह्मण समाज संगठनों द्वारा परशुराम जयंती पर पूजा-अर्चना, भंडारे सहित हुए अन्य आयोजन



बैतूल। परशुराम जयंती पर शुक्रवार को बैतूल शहर में विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए। जिसमें शाम के वक्त निकाली गई परशुराम सेना की शोभायात्रा आकर्षण का केंद्र रही। शहर के दुर्गा मंदिर चौक से शाम 5 बजे यह शोभायात्रा शुरू हुई जो शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए देर शाम माता मंदिर मैकेनिक चौक पहुंची, जहां पर पूजा-अर्चना के साथ इसका समापन हुआ और बाद में भंडारे का आयोजन भी किया गया। इस शोभायात्रा में हजारों की संख्या में परशुराम भक्त शामिल हुए। जिसमें महिलाएं, युवक-युवतियां, वृद्ध, बच्चे शामिल थे, सभी उत्साह के साथ जय बरष्म और परशुराम के नारे लगा रहे थे। शोभायात्रा में भगवान राम और परशुराम की झोंकी शामिल थी। जिनका जगह-जगह स्वागत और पूजा-अर्चना किया गया। इसके अलावा शुक्रवार सुबह से ही परशुराम जयंती के विशेष आयोजन शुरू हो गए थे। जिसमें सबसे पहले जिला अस्पताल में अंकुरित आहार का वितरण, इसके बाद भोजनशाला में भोजन

वितरण का कार्यक्रम हुआ। तत्पश्चात दत्त मंदिर में भी भगवान परशुराम का पूजन-अर्चना, हवन और प्रसादी वितरण हुआ। वहीं जेएच कॉलेज, जिसे अब परशुराम चौक के नाम से जाना जाता है, वहां पर भी भगवान परशुराम के फरसे का पूजन-अर्चना और प्रसादी वितरण का आयोजन हुआ। इसके अलावा बडोरा स्थित भगवान परशुराम मंदिर में भी विधि-विधान के अनुसार पूजा-अर्चना सहित भंडारा आयोजित किया गया। शहर में भगवान परशुराम की जयंती को लेकर ब्राह्मण समाज के दोनों संगठनों द्वारा यह सब आयोजन किए गए और उत्साहपूर्वक परशुराम जयंती को मनाया गया। परंपरागत तरीके के साथ-साथ हर वर्ष की तरह शाम को निकलने वाली शोभायात्रा को लेकर अभूतपूर्व उत्साह था। शहर के विभिन्न चौक-चौराहों पर पुष्प वर्षा आदि के माध्यम से इस शोभायात्रा का स्वागत सरकार किया गया। ब्राह्मण समाज के संगठनों ने परशुराम जयंती पर आयोजन में सहयोग के लिए सभी का आभार भी माना।

जिला अस्पताल की भोजशाला में करवाया भोजन

ब्राह्मण समाज संगठन द्वारा सुबह के समय जिला अस्पताल में मरीजों को अंकुरित आहार का वितरण किया गया। सर्व ब्राह्मण समाज द्वारा जिला अस्पताल की भोजन



शाला में मरीजों के परिजनों को भोजन करवाया गया। कॉलेज चौक जिसे अब परशुराम चौक के नाम से जाना जाता है। वहां पर भगवान परशुराम के फरसे को पूजन के साथ प्रसादी वितरण सनातन ब्राह्मण समाज संगठन द्वारा किया गया। सिविल लाईन स्थित दत्त मंदिर में भी भगवान परशुराम की जयंती पर पूजा-अर्चना सहित प्रसादी वितरण किया गया। बडोरा स्थित परशुराम मंदिर में सनातन ब्राह्मण समाज द्वारा पूजा-अर्चना सहित भंडारे का आयोजन किया गया।

टूटते परिवारों को लोक अदालत ने किया एक

नेशनल लोक अदालत में सैकड़ों प्रकरणों का हुआ निराकरण

बैतूल। लोक अदालत का है यह नारा.... ना कोई जीता और ना कोई हार..... ! इसको चरितार्थ करने में नेशनल लोक अदालत की अहम भूमिका होती है। आज जिले में नेशनल लोक अदालत के तहत 19 खंडपीठ की स्थापना की गई थी। यहां पर आए विभिन्न तरह के मामलों में राजीनामा कराने का प्रयास किया। जिसमें कई मामलों में सफलता भी मिली। इस लोक अदालत की खास बात यह है कि आज कई ऐसे टूटते परिवार फिर से एक हो गए जो कि लंबे समय से अलग-अलग रह



रहे थे। न्यायाधीश, वकीलों की समझाईश पर जब दोनों पति-पत्नी साथ रहने को तैयार हुए तो उन्हें सभी ने बधाई भी दी। दम्पतियों ने एक-दूसरे की माला पहनाकर पुनं नया जीवन जीने को तैयार हुए हैं यह नेशनल लोक अदालत की बड़ी उपलब्धि है। निराकृत हो रहे अधिकांश मामलों श्री प्राण नेशनल लोक अदालत को लेकर जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री प्राणेश कुमार प्राण ने बताया कि शनिवार नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया गया है। पूरे जिले में 19 खंडपीठ की स्थापना की गई है। सारे जज, खंडपीठ के सदस्यगण, अधिवक्तामण और न्यायालयीन कर्मचारी गण इस लोक अदालत में एक नया मुकाम हासिल करने के लिए प्रयासरत हैं। अभी तक कुटुम्ब न्यायालय में लगभग आधा सैकड़ मामले समझौता से निराकृत हो चुके हैं।

एक साथ रहने खुशी-खुशी घर गए दम्पति- इसमें से चार-पांच ऐसे मामलों में हैं। जिसमें पति-पत्नी अलग-अलग रह रहे थे वो अब खुशी-खुशी नया जीवन प्रारंभ करने के लिए अपने घर खाना हुए हैं। ईश्वर उनके जीवन को सुखमय बनाए। अगर वह साथ में आगे भी रहते हैं तो यह नेशनल अदालत की बड़ी उपलब्धि होगी। इसके अलावा भी अदालतों में कई मामले निपट रहे हैं। राजीनामा योग्य अपराधिक प्रकरण भी अच्छी संख्या में निपट रहे हैं। विद्युत विभाग के प्रकरणों का भी निराकरण हो रहा है। पीडिता को दिलाया मुआवजा अधिवक्ता हीरामन सूर्यवंशी ने बताया कि राजकुमार आदिवासी किचोली मोंटर साईकिल से जा रहा था। उसे एक एम्बुलेंस ने टक्कर मार दी थी। राजकुमार का बैतूल और बांधवा में उपचार किया गया था। इस दौरान बीमा कंपनी को न्यायाधीश और वकीलों ने की भी समझाईश दी जिसके बाद पीडित को 35 हजार रुपए का मुआवजा दिया गया है। पीडित इस राशि से और उपचार करा सकता है।

प्राकृतिक स्विमिंग पूल में तैराकी का जुनून उत्साह के चरम पर...



जो सुबह-शाम किसी पेड़ पर एकत्रित पक्षियों की चहचहाहट वाली गुंज महसूस कराता। काले महादेव मंदिर के ठीक नीचे तपस्वी घाट पर तैराकी प्रशिक्षण वैसे वर्षों से होते आ रहा। लेकिन पिछले दो-तीन वर्षों से तैराकी कला सीखने की सप्धां कुछ ज्यादा दिखाई देती है। इसका एक कारण यह भी समझ आता है कि नर्मदा घाट पर खो भराई के नाम पर लगाई गई करोड़ों की राशि का उपयोग भले ही खो भराई में नहीं हुआ हो लेकिन हर गुर्जों के सामने अंदर पानी में प्लेटफार्म बनाकर फिर सुरक्षा की दृष्टि से लगी निश्चित दूरी पर लोहे की जंजीरें एक किस्म से स्वीमिंग पूल का आभास करता है जो नन्हें तैराकों को डरने की जगह उछल-कूद मौज-मस्ती वाला स्थान है, बस खेल खेल में तैरने का अत्यास कर तैराकी कला ग्रहण कर रहे हर बच्चे की यहां निगरानी जरूरी है बच्चा जंजीर के पास नहीं पहुंच पाए और यह जिम्मेदारी प्रशिक्षक और पालक दोनों ही बाखूबी कर रहे हैं।

नर्मदापुरम- संजीव डे राय नर्मदापुरम में एक बार फिर ग्रीष्म कालीन अवकाश में तैराकी प्रशिक्षण का जुनून नर्मदा घाट पर देखने को मिल रहा। प्राकृतिक स्वीमिंग पूल बनी नर्मदा नदी में इस समय तैराकी का जुनून उत्साह के चरम पर है। अल सुबह से ही यहां तैराकी प्रशिक्षण पाने वाले और तैराकी प्रशिक्षण देने वाले विद्यार्थी और प्रशिक्षक दोनों ही जमा हो जाते, तैरने से पहले यहां प्रशिक्षणार्थी कुछ कसरत करते फिर पानी में उतर जैसे प्रशिक्षक उन्हें तैरने की बारिकियों को समझाते उन्हें ग्रहण कर प्राकृतिक स्वीमिंग पूल में अनुशरण करते। प्रशिक्षकों के अलावा तैराकी सीख रहे बच्चों के मौजूद अभिभावक द्वारा उत्साह वर्धन करने से वे प्रशिक्षक और अभिभावकों की उपस्थिति में तैराकी प्रशिक्षण दुगुने उत्साह से प्राप्त कर रहे। प्रशिक्षण ग्रहण करने पानी में उतरने वाले बच्चों की एक साथ प्रसन्नता और भय दोनों की मिश्रित चीख-पुकार, शोर शराबा पक्षियों के कलरस सा समझ आता

रणवीर कपूर की ‘रामायण’ कानूनी पचड़े में फंसी

रणवीर कपूर की फिल्म ‘रामायण’ जब से अनाउंस हुई थी, तब से चर्चा में बनी हुई है। नितेश तिवारी के डायरेक्शन में बनने वाली इस फिल्म के सेट से बीते दिनों तमाम तस्वीरें लीक हुईं। अब फिल्म ‘रामायण’ को लेकर नई तरह की खबर सामने आई है। दरअसल, रणवीर कपूर की ये फिल्म कानूनी पचड़े में फंसी तो नजर आ रही। बताया जा रहा है कि फिल्म ‘रामायण’ का अल्ट्रा मटेना मीडिया वेंचर्स एलएलपी और प्राइम फोकस टेक्नोलॉजीज और प्राइम फोकस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड को बीच अधिकारों को लेकर विवाद है।

अल्ट्रा मटेना मीडिया वेंचर्स एलएलपी और प्राइम फोकस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड फिल्म ‘रामायण’ के टाइटल के अधिकारों पर विवाद कर रहे हैं। दोनों ने अप्रैल, 2024 में इसके लिए बातचीत शुरू की थी। लेकिन, कहा जा रहा है कि इंटेलिक्चुअल प्रॉपर्टी राइट्स को लेकर बातचीत फेल रही है, क्योंकि प्रेमेंट को पूरा नहीं किया गया। अल्ट्रा मटेना मीडिया वेंचर्स एलएलपी का

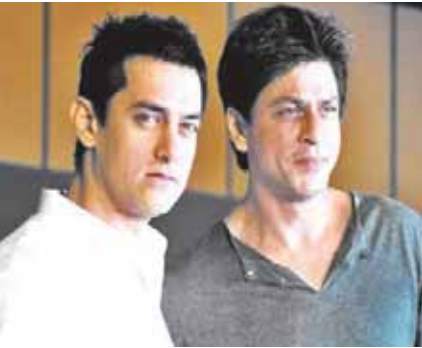


दावा कि फिल्म ‘रामायण’ के राइट्स उनके पास बने रहेंगे और प्राइम फोकस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड या किसी भी दूसरे संस्थान द्वारा स्क्रिप्ट या मटेरियल को कोई भी इस्तेमाल उनके कॉपीराइट का उल्लंघन होगा। प्राइम फोकस टेक्नोलॉजीज लिमिटेड का फिल्म ‘रामायण’ मटेरियल में कोई अधिकार या स्वामित्व नहीं है। अल्ट्रा मटेना मीडिया वेंचर्स एलएलपी ने जरूरत पड़ने पर अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कानूनी कार्रवाई करने की भी बात

कही है। डायरेक्टर नितेश तिवारी की फिल्म ‘रामायण’ को लेकर आई इस खबर से फैंस चिंतित हो गए हैं कि कहीं इस पर ताला ना लग जाए। हालांकि, फिल्म ‘रामायण’ के अधिकार को लेकर हो रहे विवाद पर नितेश तिवारी और सह निर्माता और साउथ एक्टर यश का रिएक्शन नहीं आया है। फिल्म ‘रामायण’ में राम के रोल में रणवीर कपूर, सीता के रोल में साई पल्लवी, रावण के रोल में यश नजर आने वाले हैं।

आमिर की शाहरुख को सीधी चुनौती!

शाहरुख खान और आमिर खान के बीच पुरानी दुश्मनी रही है। दोनों सितारे एक दूसरे को अपना तगड़ा कॉम्पिटीटर मानते रहे। हालांकि बदलते वक्त के साथ इन दोनों सितारों के बीच भी सालों पुरानी कोल्ड वॉर खत्म हो चुकी है। ‘गदर 2’ की सक्सेस पार्टी के दौरान दोनों सितारे गिले शिकवे भुलाकर एक साथ तस्वीरें क्लिक करवाते दिखे। इसके बाद इनके बीच रिश्ते की नई शुरुआत होती दिखी। लेकिन, अब एक बार फिर इन दोनों के फैंस दोनों सितारों के बीच एक तगड़ी जंग ऑन स्क्रीन देखने के लिए एक्साइटेट हैं। खबर है कि सुपरस्टार आमिर खान



अपनी अपकॉमिंग मूवी में ‘डॉन’ का किरदार निभाने वाले हैं। जिससे एक बार फिर दोनों स्टार्स के बीच मुकाबला देखने को मिलेगा।

आमिर खान अपने भांजे इमरान खान की अगली फिल्म ‘हैप्पी पटेल’ में डॉन का किरदार निभाने वाले हैं। इस बारे में एक दिलचस्प जानकारी दी है। आमिर खान अपने भांजे इमरान खान को रीलॉन्च करने की तैयारी में हैं। ये आमिर खान की होम प्रोडक्शन की फिल्म होगी। जिसमें फिल्म स्टार एक ‘डॉन’ का किरदार निभाने वाले हैं। जबकि, इमरान खान फिल्म में ‘जासूस’ की भूमिका में नजर आएंगे।

‘डॉन’ बनने की जानकारी सामने आते ही लोग इसकी तुलना सीधे-सीधे शाहरुख खान से की जा रही है। फिल्म इंडस्ट्री में अमिताभ बच्चन के बाद शाहरुख खान के ‘डॉन’ अवतार ने सिनेमाघरों को हिला दिया था। इसके बाद से आज तक लोग शाहरुख खान को ही दोबारा ‘डॉन’ के रोल में देखना चाहते हैं। अगर अब शाहरुख खान के बाद सुपर स्टार रणवीर सिंह ने ‘डॉन’ सीरीज की अगली मूवी हथिया ली।

सलमान की ‘सिकंदर’ में धमाल मचाएंगी रश्मिका

लौवुड सुपरस्टार सलमान खान इन दिनों सुखियों में छूटे हैं। हाल ही में सलमान खान के घर के बाहर कुछ लोगों ने ताबड़तोड़ फायरिंग की थीं। इसके बाद पुलिस ने बेहद कम समय में उन हमलावरों को पकड़ लिया। वहीं पुलिस अब भी इस मामले की जांच कर रही है। ईद के मौके पर बॉलीवुड के भाईजान ने एक तोहफा दिया। सलमान ने अपनी अपकॉमिंग फिल्म ‘सिकंदर’ को लेकर जानकारी दी। इस बीच सलमान खान की आने वाली मूवी सिकंदर को लेकर एक अपडेट सामने आया है। बताया जा रहा है कि इस मूवी में रणवीर कपूर की इस एक्स्टेंस की एंट्री हो गई है।



सबसे हैडसम एक्टर रणवीर कपूर की मूवी ‘एनिमल’ हाल ही में रिलीज हुई थी, जिसे लोगों ने दिल खोलकर प्यार दिया था। इस मूवी में रश्मिका मंदाना बतौर लीड एक्ट्रेस दिखाई दी थीं। अब खबर है कि रश्मिका मंदाना, सलमान खान की मूवी ‘सिकंदर’ में नजर आएंगी। इस बात की जानकारी खुद एक्ट्रेस ने अपने सोशल मीडिया पर दी है। रश्मिका मंदाना ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर लिखा कि वो इस मूवी हिस्सा बनकर काफी अच्छा महसूस कर रही है। बॉलीवुड से लेकर साउथ तक में अपनी अलग पहचान बनाने वाली एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना जल्द ही अल्ट्रा अर्जुन के साथ ‘युष्मा-2’ में नजर आने वाली हैं। इस मूवी का अच्छा खासा बज बना हुआ है। फैंस इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। यह फिल्म 15 अगस्त को बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। मालूम हो कि रश्मिका मंदाना को लोगों ने नेशनल क्राश का टैग दिया है। रश्मिका मंदाना सोशल मीडिया पर खासा एक्टिव रहती हैं।

रियल बॉक्स

हेमंत पाल

लेखक ‘सुबह सवेरे’ इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।



जब फिल्में बनना शुरू हुईं, तब बरसों तक गढ़ी कहानियों पर फिल्में बनाई जाती रही। इसके साथ राजा-महाराजाओं के किस्सों और धार्मिक कथाओं के आधार पर फिल्में बनाई गईं। पर, वक्त के साथ इसमें बदलाव आते रहे। दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए नए-नए विषय खोजे गए। सामाजिक स्थितियों से उत्पन्न घटनाओं को कथानक का रूप देकर उसे फिल्माया जाने लगा। लेकिन, दर्शक की पसंद कभी एक जैसी नहीं रहती। कुछ दिनों में वह एक से कथानक जैसी फिल्मों से ऊबने लगता है। फिल्मकारों ने इसका भी जवाब खोजा और अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों से लोगों की नजरों में छाप लोगों पर फिल्में बनाई। इस तरह की बायोपिक फिल्मों को पसंद किया गया। अब फिल्मकार इसमें भी रोचक किरदारों के साथ घटनाएं ढूंढने लगे। क्योंकि, कई बायोपिक को दर्शकों ने नापसंद किया। इसके बाद कुछ सालों से सच्ची घटनाओं पर आधारित फिल्मों का चलन बढ़ा। सच्ची कहानियों पर फिल्में बनाना आसान नहीं है। साथ ही यह अनिश्चय वाला प्रयोग है, फिर भी ये दर्शकों को पसंद आ रहा। इसलिए कि दर्शक घटना के सच से वाकिफ होना चाहते हैं।

सच्ची घटनाओं पर बनी फिल्मों में गुंजन सक्सेना, छपाक के बाद ‘12वीं फेल’ और ‘अमर सिंह चमकीला’ ने जिस तरह सफलता पाई, वो चमत्कृत करने वाली बात है। ‘12वीं फेल’ ने एक औसत क्षमता वाले स्टूडेंट की ज़िद बताई जिसे अफसर बनना है। मुश्किल हालात के बावजूद वो आईपीएस बनता है। जबकि, ‘अमर सिंह चमकीला’ पंजाब के गायक पर बनी फिल्म है, जिसने 80 के दशक के इस गुमनाम हो चुके पंजाबी गायक को चारों तरफ फिर लोकप्रिय बना दिया। 80 के दशक का जो गायक अभी तक पंजाब तक सीमित था। वक्त ने उसकी यादों को भी भुला भी दिया था, पर इस फिल्म के बाद वो देश-विदेश में पहचाना जाने लगा। फिल्म ‘अमर सिंह चमकीला’ को सिर्फ बायोपिक नहीं कहा जा सकता। ये पंजाब के लोक गायक अमर सिंह चमकीला के उत्थान और अंत से जुड़ी कहानी है। मुख्य किरदार निभाने वाले दिलजीत दोसांझ भी इस फिल्म से दर्शकों की आंख का तारा बन गए। इमियाज अली की इस फिल्म ने कसौती की बखूबी दर्शाया। इसमें पंजाब की परंपरा और लोगों के संगीत के शौक को फिल्माया। फिल्म की खास बात यह भी कही जा सकती है कि इसमें चमकीला की कमजोरियों को छिपाने की कोशिश नहीं की गई। उन पर गंदे गाने का आरोप लगा, तो उसे उसी तरह फिल्माया भी गया। यही वजह है कि ‘अमर सिंह चमकीला’ सच्ची कहानियों वाली फिल्मों के लिए मील का पत्थर बन गई।

सच्ची कहानियों वाली फिल्मों के इतिहास को कुरेदा जाए तो युद्धकाल के हालात पर ऐसी फिल्में ज्यादा बनी हैं। फिल्म ‘गुंजन सक्सेना-द कारगिल गल’ (2020) देश की पहली महिला एयरफोर्स पायलट के जीवन और युद्ध क्षेत्र की एक घटना पर बनी है। फिल्म में जाह्नवी कपूर की मुख्य भूमिका है। कथानक के अनुसार, यह 1999 में कारगिल युद्ध के दौरान एक महिला फ्लाईंग ऑफिसर के शौर्य की कहानी है, जब उसने एक चीता विमान को विपरीत परिस्थितियों में युद्ध क्षेत्र में उतारा और कई सैनिकों को बचाया था। ‘शेरशाह’ (2021) भी युद्ध की स्थितियों में बनी सफल फिल्म रही। इसमें सिद्धार्थ महंता ने कारगिल युद्ध के शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा किरदार निभाया। इस फिल्म में विक्रम बत्रा के युद्ध के मैदान में दिखाए अदम्य साहस का कथानक है। फिल्म में कियारा आडवाणी ने विक्रम बत्रा की प्रेमिका डिम्पल की भूमिका की है। ‘उरी-द सर्जिकल स्ट्राइक’ (2019) एक एक्शन फिल्म है। इसका कथानक 2016 में पाकिस्तान-निर्वाचित कश्मीर (पीओके) में आतंकवादी लॉन्च पैड के खिलाफ भारतीय सेना के सर्जिकल स्ट्राइक पर रचा गया है। उरी में आतंकवादी हमले में 19 भारतीय सैनिक मारे गए थे। यह फिल्म ऑपरेशन के दौरान हुई 11 अनजक घटनाओं के बारे में बताती है। इसमें विक्की कौशल, यामी गौतम के अभिनय को सराहा गया था। सनी देओल की हिट फिल्मों में से एक ‘बाईर’ (1997) की कहानी सत्य घटना से प्रेरित है। फिल्म में 1971 के भारत-पाक युद्ध के समय लड़े गए लोंगोवाला के युद्ध को फिल्माया गया। जिसमें राजस्थान के लोंगेवाला पोस्ट पर 120 भारतीय जवान सारी रात पाकिस्तान की टॉक रेजिमेंट का सामना करते हैं।

सच्ची घटनाओं पर बनी फिल्में ज्यादा असरदार

2016 में आयी फिल्म ‘रुस्तम’ युद्धकाल की कहानी तो नहीं सुनाती, पर ये फिल्म नौसेना के एक अफसर रुस्तम (अश्व कुमार) पावरी की पत्नी सिंधिया (इलियाना डिकरूज) के विवाहेतर संबंधों पर बनी है। यह कहानी नौसेना के अफसर केएम नानावटी की सच्ची घटना पर बनाई गई है। 2022 में आई फिल्म ‘मेजर’ की कहानी मुंबई पर हुए आतंकवादी हमले (26/11) में शहीद हुए 51 एनएसजी जवान मेजर संदीप उन्नीकुण्ण की ज़िंदगी पर आधारित है। फिल्म ‘द गाजी अटैक’ भारत-पाकिस्तान के बीच हुए 1971 के युद्ध की सच्ची घटनाओं पर बनी। गाजी एक पाकिस्तानी पनडुब्बी थी, जिसे भारत के जांबाजों ने नष्ट किया था। ‘मद्रास कैफे’ श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों के खिलाफ भारतीय सेना के हमले पर बनाई गई। ‘परमाणु-द स्टोरी ऑफ पोखरण’ युद्धक फिल्म है, पर ये भारत की परमाणु तैयारियों पर बनी है। फिल्म भारत के परमाणु बम के पोखरण में हुए परीक्षण की घटनाओं पर आधारित है। फिल्म में दिखाया गया है कि किन परिस्थितियों और मुश्किलों का सामना करते हुए परमाणु का सफल परीक्षण किया गया था। फिल्म ‘भुज-द प्राइड ऑफ इंडिया’ (2021) एक सत्य घटना पर बनाई गई। भारत-पाकिस्तान के बीच 1971 में युद्ध के दौरान गुजरात के भुज



एयरबेस के रनवे को पाक सेना ने बमबारी करके तहस-नहस कर दिया था। उस वक्त भुज एयरबेस के तत्कालीन प्रभारी आईएफएफ स्काइन लीडर विजय कर्णिक और उनकी टीम ने गुजरात के मधेपुरा और आसपास के गांव की 300 महिलाओं की मदद से वायुसेना के एयरबेस का पुनः निर्माण किया था। फिल्म में विजय कर्णिक की भूमिका अजय देवगन की है।

अश्व कुमार की फिल्म ‘केहरी’ (2019) भी सारागढ़ी की प्रसिद्ध लड़ाई (1897) पर बनी है। इस युद्ध में 21 सिख सैनिकों ने 10 हजार परतू आक्रमणकारियों की सेना के खिलाफ बहादुरी और जोश के साथ लड़ाई लड़ी थी। ब्रिटिश भारतीय सेना की ‘36 सिख रेजिमेंट’ के 21 जाट सिखों को सारागढ़ी में तैनात किया गया था। 2018 में आई ‘राजी’ जासूसी कथानक पर बनाई गई फिल्म है। इसमें आलिया भट्ट ने ‘राजी’ की भूमिका निभाई। वो भारतीय जासूस होती है, जिसकी शादी पाकिस्तानी सैन्य अधिकारी से शादी कर है। ये एक सच्ची कहानी पर बनाई गई, जिसका कथानक 2008 में प्रकाशित हरिंदर सिक्का के उपन्यास ‘कॉलिंग सहमत’ पर आधारित है। फिल्म ‘सरबजीत’ (2016) पाकिस्तान की जेल में बंद भारतीय कैदी सरबजीत पर केंद्रित है। फिल्म में उसके और परिवार के जीवन को बखूबी दर्शाया गया। फिल्म में रणदीप हुड्डा और ऐश्वर्या राय मुख्य किरदार निभाए हैं।

युद्ध के अलावा क्रिकेट और अन्य खेलों के कथानक पर भी कुछ फिल्में बनीं। कुछ बायोपिक बनीं तो कुछ किसी एक सच्ची घटना पर केंद्रित करके बनाया गया। विश्वकप क्रिकेट में 1983 में भारतीय टीम की जीत पर 2021 में बनी फिल्म ‘83’ को कप्तान कपिल देव पर केंद्रित किया गया। इसमें रणवीर सिंह ने कपिल देव का रोल किया था। यह विश्व कप क्रिकेट में भारत की जीत पर बनी है। लेकिन, इस फिल्म को करीब चार दशक बाद बनाया गया, इसलिए दर्शक पचा नहीं पाए। 2016 में आई फिल्म ‘एनएस धोनी-द अनटोल्ड स्टोरी’ भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान की ज़िंदगी के उतार चढ़ाव को दिखाया गया। इस फिल्म में सुरशंत सिंह राजपूत ने एमएस धोनी का किरदार बखूबी से निभाया है। इसी तरह की क्रिकेट वाली फिल्म ‘शाबाश मिथु’ (2022) भारतीय महिला क्रिकेटर मिताली राज की ज़िंदगी पर बनाया गया है। सचिन तेंदुलकर पर भी एक फिल्म बनाने की कोशिश हुई, पर ये महज वृत्तचित्र बनकर रह गई। आमिर खान की सफल फिल्मों में गिनी जाने वाली ‘दालत’ (2016) भारतीय पहलवान गीता

फोगाट, बबीता फोगाट और उनके पिता महावीर फोगाट के जीवन संघर्ष पर आधारित है। महिला पहलवान के शिखर तक पहुंचने वाली इस फिल्म ने बिजनेस भी अच्छा किया था। 2018 में रिलीज हुई अश्व कुमार की ‘गोल्ड’ एक ऐतिहासिक स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है। इसमें अश्व कुमार ने तपन दास का किरदार निभाया है, जिसने 1948 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में भारत के लिए हॉकी में पहला स्वर्ण पदक जीता था। यह 1948 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में भारत की पहली राष्ट्रीय हॉकी टीम की यात्रा पर आधारित है।

सिर्फ युद्धकाल और खेल की सच्ची कहानियों पर ही फिल्में नहीं बनाई गईं, साहसिक और सामाजिक घटनाओं पर भी फिल्में बनीं और पसंद की गईं। ऐसी ही एक फिल्म बनी ‘नीरजा’ जो बहादुर फ्लाइट अटेंडेंट नीरजा भनोटी की सच्ची कहानी पर है। वे 1986 के पैन अमेरिकन फ्लाइट हर्दजैक के दौरान यात्रियों की रक्षा करते हुए मारी गई थी। इसके बाद 2020 में मेघना गुलजार के निर्देशन में फिल्म ‘छपाक’ को विषय बनाया गया जो एसिड अटैक सर्वाइवर लक्ष्मी अग्रवाल की ज़िंदगी पर आधारित फिल्म है। इस फिल्म में दीपिका पादुकोण ने लक्ष्मी का किरदार निभाया, जिसे दर्शकों ने पसंद किया। इस फिल्म के जरिए ही एसिड अटैक सर्वाइवर लक्ष्मी अग्रवाल की कहानी घर-घर तक पहुंची। ‘छपाक’ में उनके साथ अभिनेता विक्रान्त मैसी और रोहित सुखानी मुख्य भूमिका में थे। ऐसी ही एक सामाजिक कहानी थी रानी मुखर्जी की ‘मिसेज चटर्जी वर्सेस नॉर्वे’ जो बेहद संवेदनशील सच्ची कहानी पर आधारित है। कुछ सच्ची प्रेम कहानियां भी ऐसी फिल्मों का आधार बना। फिल्म ‘माझी-द माउन्टेन मैन’ (2015) ऐसी ही सच्ची प्रेम घटना पर बनाई गई है। बिहार के गया जिले युवक दशरथ मांझी ने अपनी पत्नी के प्यार में पहाड़ काटकर रास्ता बनाया था। क्योंकि, पहाड़ की वजह से उनकी पत्नी अस्पताल नहीं पहुंच पाई और उसकी मौत हो गई। छेनी और हथौड़े के सहारे मांझी ने 55 किलोमीटर की दूरी को 15 किलोमीटर की दूरी में बदल दिया था।

‘एयरलिफ्ट’ (2016) फिल्म 1990 में इराक-कुवैत युद्ध में फंसे एक लाख 70 हजार भारतीयों को सुरक्षित निकालने की सच्ची कहानी है। कुवैत में बसे कुछ भारतीयों की मदद और भारत सरकार की पहल पर एयर इंडिया के विमान 59 दिनों में 488 उड़ानों के जरिए सभी भारतीयों को सुरक्षित स्वदेश लेकर लौटे थे। फिल्म में अश्व कुमार एक सफल व्यवसायी की भूमिका निभाते हैं

जो अपने परिवार और अन्य लोगों को भारत पहुंचने तक सुरक्षित रखने का प्रयास करता है। पटना के प्रसिद्ध गणितज्ञ आनंद कुमार के जीवन और परिश्रम को दर्शाने वाली फिल्म सुपर-30 (2019) बायोपिक से ज्यादा प्रेरणादायक फिल्म है। यह बायोपिकालिक ड्रामा फिल्म गणित के शिक्षक आनंद कुमार के जीवन और उनके शैक्षिक कार्यक्रम पर आधारित है। वास्तव में तो ‘सुपर 30’ पटना में रामानुजन स्कूल ऑफ मैथमेटिक्स द्वारा स्थापित एक भारतीय शैक्षिक कार्यक्रम है। इसमें रश्मिका रोशन ने आनंद कुमार का किरदार निभाया। प्रियंका चोपड़ा की फिल्म ‘द स्काई इज पिंक’ (2019) फिल्म 18 साल की चर्चित लेखिका आयशा चौधरी के कम उम्र में किए गए अद्भुत कार्यों और उनकी ज़िंदगी पर आधारित है।

सच्ची कहानियों पर बनी फिल्मों की सूची कभी खत्म नहीं होगी। फिल्म ‘रेड’ (2018) सच्ची कहानी पर आधारित है। इसमें अजय देवगन, सौरभ शुक्ला और इलियाना डिकरूज ने काम किया है। यह फिल्म 80 के दशक में सरदार इंद्र सिंह पर आयरन विभाग की वास्तविक छापेमारी पर आधारित है। 2018 में आई ‘केदारनाथ’ (2018) का कथानक सच्ची प्राकृतिक त्रासदी वाली फिल्म है। इसी में पनपती है एक प्रेम कथा। जून 2013 में उत्तराखंड में अचानक आई बाढ़ में 169 लोग मारे गए और 4021 लोग लापता हो गए। संजय लीला भंसाली की ‘गंगूबाई काठियावाड़ी’ (2022) गंगूबाई हरजीवनदास की सच्ची कहानी पर आधारित बनी फिल्म है। उन्होंने मुंबई के कमटोपुरा में एक वेश्यालय चलाया, जिसने ग्राहकों के रूप में कई कुख्यात अपराधियों को भी आकर्षित किया। गंगूबाई की भूमिका आलिया भट्ट ने निभाई है। फिल्म ‘आर्टिस्ट-15’ (2019) बदायूं में 2014 में हुए कांड पर आधारित है जिसने उत्तर प्रदेश के जातिवाद का बेहद खराब दिखाया था। पिछड़े वर्ग की दो लड़कियां एक पेड़ से लटक की मिली थीं। लड़कियों के घरवालों का आरोप था कि सीबीआई की रिपोर्ट झूठी है। क्योंकि, लड़कियों के साथ ये कृत्य करने वाले ऊंची जाति के लोग हैं। वास्तविक घटनाओं पर फिल्में बनने का सबसे बड़ा फायदा ये होता है कि दर्शक उसका कलात्मकता जानता है फिर भी सारा घटनाक्रम जानने उसमें उत्सुकता बनी रहती है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919



अशोक जोशी

जाने माने कवि कुमार विश्वास ने पिछले दिनों जिन जगत की एक घटना सुनाई। देव आनंद के निर्देशन में बनने वाली पहली फिल्म ‘प्रेम पुजारी’ के लिए संगीतकार सविन देव बर्मन मजरूह सुल्तानपुरी से गीत लिखवाना चाहते थे। लेकिन, देव



आनंद इस घटना से 45 साल पहले ही नीरज को अपनी फिल्म में लिखने का न्यौता दे चुके थे। तब सविन देव बर्मन ने ऐसा काम किया कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। वह देव आनंद का आग्रह तो ठुकरा नहीं सकते थे। उन्होंने नीरज के सामने ही ऐसी स्थिति पेश करने की सोच चुके थे कि वह सिन्धुएशन पर गीत न लिख गए। फिर जो हुआ वो पढ़िए।

रा | हिन्दी कविता के सशक्त अक्षर एवं युवा वर्ग में लोकप्रिय कुमार विश्वास जो कह रहे थे वह किसी एक कवि द्वारा दूसरे कवि के लिए कहा जाना अप्रत्याशित सा लगता है। आमतौर पर साहित्य में अपनी ही शैली के दूसरे साहित्यकार की प्रशंसा करने की घटनाएं बिले के ही पायी जाती हैं। कुमार विश्वास ने कहा कि बाबा नीरज भी अनूठे व्यक्ति थे। उन्होंने जिस तरह से हिन्दी कविता को लोकप्रिय बनाया अपने आप में बेमिसाल है। 1955-56 की एक काव्य संध्या में देव आनंद ने नीरज को सुना था। उनकी कविताएं उन्हें इतनी भाई कि उन्होंने नीरज के सामने सीधे प्रस्ताव रख डाला कि यदि कभी फिल्मी गीत लिखने का मन हो, तो मैं आपके साथ काम करना पसंद करूंगा। लगभग डेढ़ दशक बाद नीरज ने फिल्मी पत्रिका स्क्रीन में ‘प्रेम पुजारी’ का विज्ञापन देखा। इस विज्ञापन को देखकर नीरज ने देव आनंद को पोस्ट कार्ड लिखकर डाला और अपने वायदे को याद दिलाई। उन्हें लगा कि देव आनंद इतने व्यस्त सितारे हैं वह इस बात को भूल गए होंगे। लेकिन, उन्हें तब आश्चर्य हुआ जब दस दिन में उन्हें मुंबई आने का एयर टिकट मिला। यह देव आनंद ने उन्हें पहुंचाया था।

उस समय नीरज अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में साहित्य-शिक्षक थे। छह दिन की छुट्टी लेकर वे मुंबई के लिए रवाना हो गए। उम्मीद के विपरीत देव आनंद ने उनकी खूब खातिरदारी और सम्मान किया। नीरज को सांताक्रूज के महंगे होटल में ठहराया और खर्च के लिए हजार रुपया एडवांस भी दिया। नीरज के तो डट हो गए। असली परीक्षा तो तब हुई, जब देव आनंद उन्हें एसडी बर्मन के पास लेकर गए। एसडी बर्मन की धारणा थी कि क्या कवि



फिल्मी गीत भी लिख सकते हैं! इस बात पर उन्हें गहरा संदेह था। देव आनंद ने बर्मन दादा से कहा कि आप धुन बताएं, नीरज जी लिखेंगे। अगर नीरज जी आपके मनमाफिक नहीं लिख पाते हैं, तो छह दिन मेरे मेहमान बनकर रहेंगे। बर्मन दा ने नीरज को सिन्धुएशन बताई कि एक भारतीय प्रेमिका अपने प्रेमी को खोजते हुए विदेश तक चली जाती है। नायिका, नायक को किसी पार्टी में गैर स्त्री के साथ देखती है। वह अवसाद से डूबी है, मन में गहरी निराशा है। हां इसमें उसकी स्त्री सुलभ ईर्ष्या भी झलकनी चाहिए और अपने प्रेम के खातिर एक पार्टी में शराब तक पीने को तत्पर हो जाती है। इस सिन्धुएशन के लिए उन्होंने नीरज को धुन बताई और ऊपर से शर्त जोड़ी कि इसमें शराब का जिक्र तो होगा। लेकिन मय, शराब और जाम जैसे बोल बिलकुल नहीं होंगे और गीत के बोल ‘रंगीला रे’ से शुरू होना चाहिए।

नीरज रात भर होटल के कमरे में माथापच्ची करता है। ‘रंगीला रे तेरे रंग में यूं रंगा है मेरा मन, छलिया रे न बुझे रे किसी जल से यह

जलन’ गीत बन गया। वे उसे लेकर सीधे देव साहब के ऑफिस पहुंचे। दादा बर्मन की शर्त के अनुसार इसमें कहीं भी जाम, मय या शराब जैस शब्द नहीं आए थे। इसके बावजूद एक-एक अंतरा मोतियां से जड़ा हुआ। देव को इस



बात पर गहरा ताज्जुब हुआ कि एक ही रात में कोई इतना खूबसूरत गीत कैसे लिख सकता है! इसके बाद वे नीरज को बर्मन दा के पास ले गए और बोले, मैंने कहा था ना। नीरज ने वह कर दिखाया।

बर्मन दा ने गीत देखा। उन्हें भी गीत भा गया। एसडी बर्मन प्रशंसा करने में कंजूसी बरतते थे। वह देव आनंद से बोले, नीरज थोड़ी देर यहीं रुकेगा और हूँ आज का डिनर मेरे साथ करेगा। देव आनंद चौंक गए। क्योंकि, इतना लंबा साथ होते हुए भी कभी एसडी बर्मन ने खुद उन्हें चाय तक नहीं पूछी थी। देव साहब ने नीरज को जाते-जाते कनखियों से संकेत किया कि बात कुछ खास ही होगी, तभी तो सीधे डिनर ऑफर किया जा रहा है। देव आनंद के जाने के बाद एस. डी. बर्मन ने नीरज के सामने स्वीकार किया कि, मैंने जानबूझकर तुमको जटिल परिस्थिति दी थी कि तुम इस प्रोजेक्ट

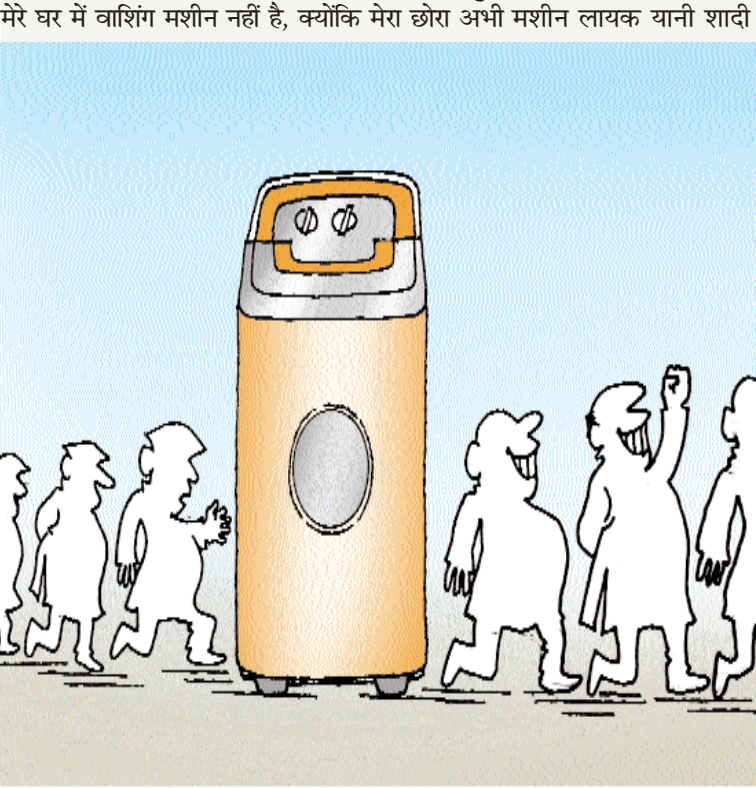


को छोड़ दो। खास बात यह है कि किसी दौर में उन्होंने यही धुन गुरुदत्त को सुनाई थी, जिसे गुरुदत्त ने अस्वीकार कर दिया। तब से वह धुन एसडी बर्मन के दिमाग में हलचल पैदा करती रही। नीरज ने इसमें शुद्ध हिन्दी के एक एक शब्द मोती के समान परोकर ‘रंगीला रे’ को एक मादक गीत बना दिया। उस पर वहीदा का बेहतरीन अभिनय इसमें चंद लगा देता है। इसी फिल्म के खूबसूरत गीतों में से से ‘शोखियों में घोला जाए’ गीत को नीरज ने अपनी कविता ‘चांदनी में घोला जाए’ से कुछ अंतरें परिवर्तित करके पेश किया। इसके बाद देव आनंद, नीरज और एसडी बर्मन की जोड़ी जम गई। नीरज को सबसे ज्यादा रॉयल्टी देव आनंद के लिए लिखे गीतों से मिली। नीरज कहते थे कि मेरे और देव साहब के बीच कभी किसी तरह का कॉन्ट्रैक्ट साइन नहीं हुआ। जबसी भरोसे पे जितनी रॉयल्टी मिली, शोहरत उससे कम न मिली।

जब मोगरी है...
तो क्या गम है!

प्रकाश पुरोहित

आज भी आम भारतीय घरों में वाशिंग-मशीन नहीं है। आशय, यह आरोप लगाना नहीं है कि सभी मशीनें दिल्ली भेज दी गई हैं या सरकार ने इसकी खरीद पर रोक लगा दी है। आज भी जो चाहे वाशिंग मशीन खरीदने के लिए आजाद है। हमारे यहां विदेशों वाला चलन तो अभी आया नहीं है कि गंदे कपड़े ले जाओ और पराई-किराए की मशीन में डाल कर धो लाओ। (आप गलत जगह जा रहे हैं!) यहां तो अपनी मशीन में सिर्फ अपने ही कपड़े धुलते हैं। पहले लड़की को दायचे में पलंग देने की रिवायत होती थी, मगर बाद में वाशिंग मशीन का दबाव पड़ने लगा। पलंग का तो फिर भी समझ आता है कि एक मनक बढ़ गया तो, एक पलंग और, लेकिन ये वाशिंग मशीन, क्या ससुराल के लोग पहले नहाते-धोते नहीं थे या गंदे कपड़े धोए ही नहीं जाते थे? लोग तब दुल्हन देखने के बहाने वाशिंग मशीन देखने जासूस भेजा करते थे कि ऑटोमेटिक है या यूं ही! 'तेरी कमीज, मेरी कमीज' का जमाना गुजर चुका था और 'तेरी वाशिंग मशीन से हमारी वाली...', की तुलना होने लगी थी।



के काबिल नहीं हुआ है। हम भी दुल्हन से ज्यादा वाशिंग मशीन का इंतजार कर रहे हैं कि 'अहा... हमारे अंगने में भी' एक अदद धुलाई कर रही होगी। वैसे पत्नी ने एक-दो बार उलाहना देना चाहा तो मैंने यह कह कर उसे चुप कर दिया कि तुम ही थोड़े साल रुक जातीं तो वाशिंग मशीन के साथ ही घर आतीं। किसी लांडी वाले ने बताया था वाशिंग मशीन की खोज तो करीब दो सौ साल पहले हो गई थी, लेकिन आप तो जानते ही हैं कि हम नकल करने में भी कितनी अकल लगाते हैं, जब तक पूरी तरह खात्री ना कर लें, हम नकल नहीं बनाते। असल की तो झंझट वैसे ही हम नहीं पालते हैं। .अधिकृत रूप से भारत में यह मशीन सौ साल पहले आ गई थी, मगर आम घरों में आने में पूरी एक सदी लग गई। इसकी वजह है, हमारे यहां जो भी चीज खरीदी जाती है, उसे पूरे समय चलना चाहिए। अब जैसे रेडियो या टीवी या मोबाइल फोन और यहां तक कि बहू ही ले लो, सांस रुक जाती है मगर ये नहीं। कीमत वसूल, यह हमारा फलसफा है। वाशिंग मशीन इतनी जगह घेरती है और इतनी बड़ी होती है कि जरूरत पड़ने पर दो-चार बच्चे तो उसमें सुलाए ही जा सकते हैं। एक परिवार में तो ट्रेंडी (यह बिल्ली का नाम है) ने बच्चे दिए तो कपड़े धोने के लिए बाई लगाना पड़ी थी कि ट्रेंडी के बच्चे उनकी वाशिंग मशीन में पल रहे थे। जब सम्पन्न परिवारों की मिनकी-सोच ऐसी है तो आम परिवार अगर वाशिंग मशीन को फालतू पड़ा देखे तो उसका खून जलना स्वाभाविक ही है। आधे घंटे में घर भर धुल गया, अब क्या करें निगोड़ी इस मशीन का, कपड़े से ढांक कर भी नहीं रख सकते, कि आते-जाते की नजर में तो आना चाहिए ना कि हम भी वाशिंग मशीन रखते हैं। कुछ तो बैगैर कपड़े के भी चलाते रहते हैं कि आवाज से पता चलता रहे कि मशीन है घर में। गांव में रावले के यहां जाना हुआ था। तब यूं ही अपनी शहरी-प्रतिभा जताने और कपड़े धो रही खूबसूरत नौकरानी पर इम्प्रेशन जमाने के लिए कह दिया कि अब तो वाशिंग मशीन ले ही लो। रावले नाक पर मक्खी ना बैठने दें, मुझे इशारे से खड़े होने के लिए कहा और वहां ले गए, जहां उनकी ढेर गाय-भैंस बंधती थीं। वाशिंग मशीन की तरफ इशारा करते हुए कहा- 'ऐसी कोई चीज नहीं, जो हमारे यहां नहीं है।' पूछ लिया- 'तो ये यहां क्या कर रही है?' बोले- 'देख नहीं रहे हो, छांछ बना रही है!' देखा मक्खन निकल रहा था। बाद में पता चला कि सच्ची में उन्हें नहीं मालूम था कि वाशिंग मशीन से कपड़े धोए जाते हैं। उन्होंने तो किसी के यहां इस तरह का ही कोई काम करते देखा था तो छांछ का आइडिया दिमाग में आया। 'कपड़े भी धोए जा सकते हैं', यह बता कर उनका दिल नहीं तोड़ना चाहता था।

ये इतनी मशीनी बातें इसलिए आज याद आ गई कि देश की जनता के हाथ में वोट की तरह, आज भी मोगरी है, क्योंकि वाशिंग-मशीन हर एक के बूते से बाहर है और भरोसा भी नहीं जम पा रहा है। आम आदमी को पछीट कर या राड़ कर गंदगी साफ करने की आदत है, फिर भी वाशिंग मशीन का मोह कभी-कभार उपजता भी था तो उसकी बदनामी से लोगों ने हाथ खींच लिए हैं। लोगों को अपने सामर्थ्य पर मशीन से ज्यादा भरोसा है और फिर यह महंगा सौदा है, जो हर एक के बस में नहीं है। पछीट कर या मोगरी से कूट कर आम आदमी को वही सुख मिलता है, जो किसी बेईमान, भ्रष्ट और नाकारा नेता को हरा कर !

और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

झूठे हाथ से मटका मत छूना
पानी हमेशा बैठ कर ही पीना

किसी बड़े के सामने पहले मत बैठना
कोई भी आए, छोटा, बड़ा, उसे पानी पूछना

हट्टे कटते लोगों को भीख मत देना
अपनी आय का कुछ हिस्सा जरूरतमंद को रखना

कोशिश करो अपने काम स्वयं करो
छोटे छोटे सही, सिकों से गुल्लक भरो

थाली में भोजन मत छोड़ना
रात के समय फूल मत तोड़ना

खाने के बाद थाली, में हाथ मत धोना
कितनी भी डांट क्यों न पड़े सच ही बोलना,
(उसकी नज़रो से झूठ छुपा जो नहीं रहता)
ऊपर वाले ने उसकी नजरों में दूरबीन लगाई है।)

मां क्या कहती थी... चलो याद करें

क्या कह रही है ज़िन्दगी

ममता तिवारी

डरावने सपने आंखेंगे, सो पैर धो के बिस्तर में जाना
पूजा ना कर पाओ कोई बात नहीं

आंख मूंद सोने से पहले प्रार्थना करना
जितमा खा सको थाली में उतना परोसो

बोलने से पहले दस बार सोचो
रात में दही की चीजें मत खाना

बालों में हफ्ते में दो बार तेल मलना
बाई करवट लेकर सोओ
बाल फैला कर मत घूमो

मुंह पर हाथ रख हँसो
मीठा खाने के बाद कुल्ला करो

आलथी पालथी मार के बैठो
अपने व्यवहार से सबका दिल जीतो।
ऐसी तमाम बातें है जो आपको मां ने सिखाई है। और ऐसी बातों का हारी मां कोई वैज्ञानिक कारण या लॉजिक नहीं दे पाती थी। आज जब खुद मां हूँ तब इन बातों का लॉजिक मुझे पता चल गए। पढ़े लिखे और हमसे कहीं ज्यादा ज्ञानी बच्चे इसलिए तर्क करते हैं पर घूमफिर उनका विज्ञान, उनकी फिलॉसफी इन बातों का समर्थन करती है। मैं गहरी सांस लेती हूँ। अब वे मुझे सात्विक भोजन, जीवन जीने की कला, मिट्टी के बर्तन का उपयोग बताते हैं, तो उन बच्चों का भी धन्यवाद! मैं भाग्यशाली हूँ कि तुम्हारे जैसे समझदारी बच्चों की मां बनने का अवसर मिला। बस पूछते रहना अपनी मां से रोज सुबह सवरे और क्या कह रही है जिंदगी।
तोड़ने के हैं कई बहाने
जोड़ने का इंतजाम थाम रखना
जो बरसों से लिये थकी आंखें
कर रही इंतजार
उस दीवानी सी मां में
अपनी जान रखना।

अनमोल है... मां की
ममता और प्यार...!!

चाहे बदल जाए समय और संसार,पर कभी नहीं बदलती मां की ममता और प्यार...!!

//भाषान्तर//

अनुवाद मणि मोहन

भाषान्तर में सुविख्यात रुसी कवयित्री वेरा पावलोवा की एक कविता ।

रक्त की धारा के विपरीत

लालसा बचने के लिए संघर्ष करती है;

वाक शक्ति की धारा के विपरीत

शब्द संघर्ष करते है;

विचार की धारा के विपरीत

सपनों की नाव आगे बढ़ती है;

किसी नौसिखिए की तरह मैं तैरती हूँ

आँसुओं की धारा के विपरीत।

यूके से प्रज्ञा मिश्रा

धार्मिक भावना की आड़ में मीडिया-मर्दन!

आम तौर पर किसी टेलीविजन शो में ऑफ स्क्रीन ड्रामा इतना नहीं होता, जितना नेटफ्लिक्स की सीरीज 'बेबी रेनडियर' के साथ हो रहा है। बिना किसी उम्मीद या चेतावनी के नेटफ्लिक्स पर रिलीज सीरीज ने हंगामा मचा रखा है। रिचर्ड गैड के भयावह हॉरर शो को देखने के लिए बैठे, हैरान थे कि यह हकीकत में थी। इंटरनेट जासूसों की छोटी-सी सेना ने इन किरदारों की असली पहचान ढूँढ निकालने का जिम्मा लिया। हालाँकि नेटफ्लिक्स और रिचर्ड गैड ने लगातार कहा कि पहचान की कोशिश न करें। सीरीज में जो मार्था स्कॉट को स्कॉटिश महिला फियोना हार्वे ने न सिर्फ खोज निकाला बल्कि अब तो फियोना खुद ही सामने आ गई हैं। कल रात फियोना हार्वे का पियर्स मॉर्गन के यू-ट्यूब चैनल पर इंटरव्यू आया। फियोना ने दावा किया कि उससे केवल पांच या छह बार मिली थी। जब पियर्स मॉर्गन ने पूछा कि उसने उसे कितने ई-मेल भेजे थे (बेबी रेनडियर का दावा है 41 हजार जबकि वह कुछ का दावा करती है)। फियोना की बातें हर तरह से यकीन दिलाती हैं कि वो अब नेटफ्लिक्स और गैड पर मुकदमा करने वाली है, लेकिन फियोना की बातें सहानुभूति पैदा नहीं कर सकीं। दरअसल, वह कभी-कभी फोटोग्राफिक मेमोरी होने का दावा करती थी,

भूल जाती थी कि उसके पास कितने ई-मेल खाते हैं। बेशक, इंटरव्यू के लिए सहमत होना फियोना हार्वे की मर्जी थी, फिर भी पूरी बात में घिनौने शोषण की बू आ रही थी। यहां या तो हार्वे मार्था है, रिचर्ड गैड, क्लेरकेनवेल फिल्मस और नेटफ्लिक्स ने इसे सच बताते कहानी को बेतहाशा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है, जो उन सभी को कानूनी कार्रवाई के लिए खुला छोड़ देता है या फिर फियोना हार्वे ने सभी चीजें कीं, जिनका आरोप है, जिसका मतलब है कि मीडिया का बड़ा वर्ग दिमागी-बोमार महिला को क्लिक के लिए खुशी-खुशी घुमा रहा है। सच देखना बेहद असहज करने वाली बात है।

पियर्स मॉर्गन सभी गलतियों के बावजूद तेज और सधे इंटरव्यू लेने वाले हैं। ऐसे मौके भी आए, जब उन्होंने हार्वे को उस व्यवहार के लिए काबिलियत दिखाई, जो कि हार्वे पर आरोप लगाया गया था, लेकिन देखने वाले अभी भी इस एहसास से बचे थे कि यदि इंटरव्यू नहीं होता तो दुनिया शायद बेहतर जगह होती, क्योंकि यह कहानी के अंत से बहुत दूर है। न सिर्फ अब हम सभी को इस असहज सच्चाई के साथ बैठना होगा कि फियोना हार्वे अब सेलिब्रिटी हैं और अब यूके और अमेरिका के रियलिटी शो के लोग फियोना को शो में लाने के लिए कतार लगाए हैं। इतना ही नहीं, रिचर्ड गैड को सफाई देने के लिए मजबूर किया जा रहा है कि बेबी रेनडियर के कौन से हिस्से हुए और कौन से हिस्से हैं, जो जोड़े गए हैं। यह

गैड के लिए अच्छा नहीं है, जिनके लेखन पर इस हंगामे का असर हो रहा है। हार्वे के लिए अच्छा नहीं है कि उन्हें पूरा जीवन इंटरनेट के भूतों से घिरे रहने में बिताना होगा, जो बेबी रेनडियर के मूल पाठ को समझने में पूरी तरह से नाकाम रहे। यह नेटफ्लिक्स के लिए भी अच्छा नहीं है, क्योंकि लापरवाही में यह हुआ।

गैड के साथ बदतमीजी करने वाले की पहचान होती है। बेबी रेनडियर की दूसरी कहानी टीवी और कॉमेडी की दुनिया में गैड को तैयार करने और उसका यौन शोषण के बारे में है। अब तक इस आदमी की पहचान छिपाई गई है, लेकिन लंबे समय तक ऐसा नहीं रहेगा। गैड ने खुद इंस्टाग्राम कहानी पोस्ट की, जिसमें एक शख्स का नाम बताया और देखने वालों से उन पर गलत काम करने का आरोप लगाना बंद करने का अनुरोध किया गया, लेकिन अपने पोडकास्ट पर लेखक रिचर्ड उस्मान ने यह दावा करके आग में घी डालने का काम किया कि टेलीविजन व्यवसाय में हर कोई जानता है कि यह कौन है।

फियोना हार्वे की कहानी को उतना ही नजदीक से फॉलो कर रहे हैं जितना सीरीज को फॉलो किया है। बेबी रेनडियर सबक बनने जा रही है कि अगर लेखक, निर्माता, मीडिया, दर्शक खराब आदत सबके सामने पेश करें तो क्या होता है। यह कहानी आगे जो भी भयानक मोड़ लेगी, हम पर भी उतना ही निर्भर है, जितना नेटफ्लिक्स, रिचर्ड गैड और फियोना हार्वे पर।